भोजपुरी

पाँडेय कपिल
16/11/53

बरिस २
अंक ४
कातिक
३३० तु० सं०
नवंबर १९५३
आरा।

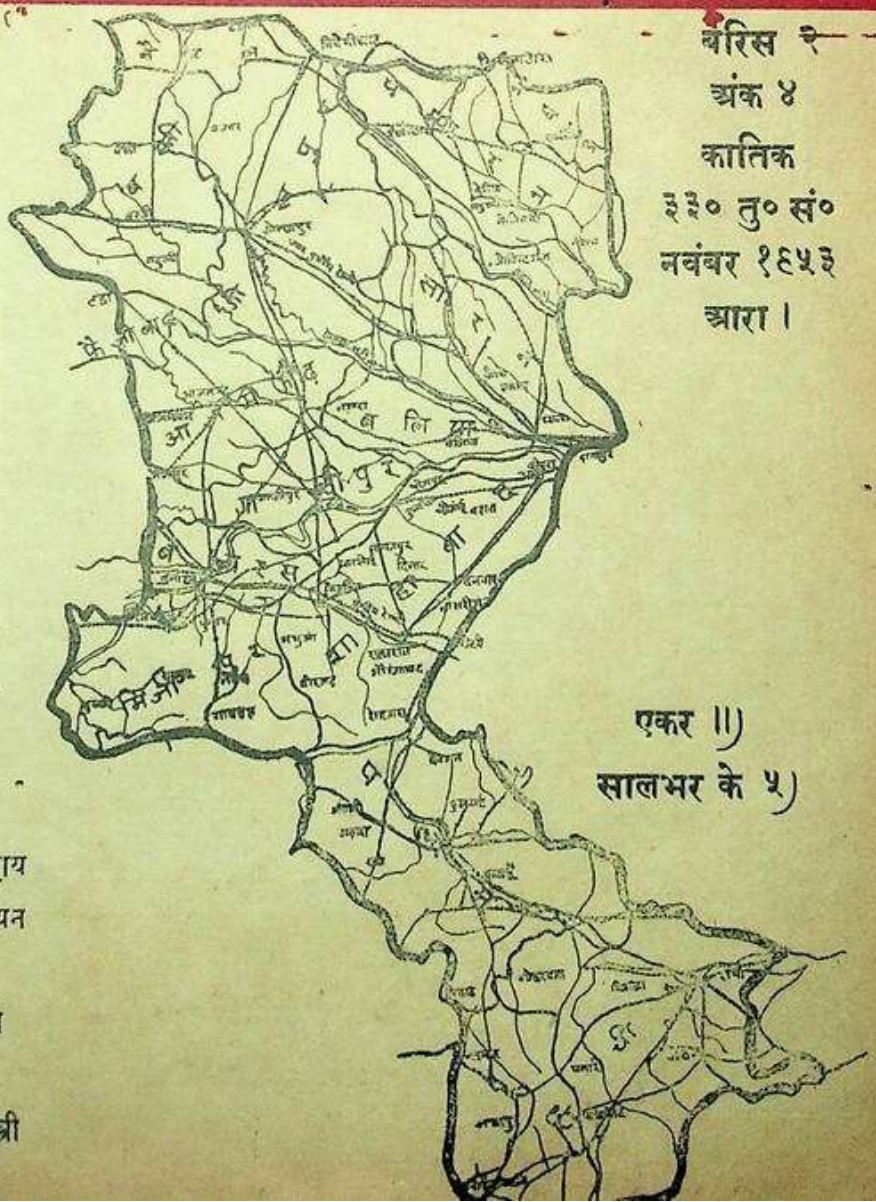

एकर ।।)
सालभर के ५)

संपादक-मंडल—
आचार्य श्री शिवपूजन सहाय
महापंडित राहुल सांकृत्यायन
श्री बलदेव उपाध्याय
डा० उदयनारायण तिवारी
डा० विश्वनाथ प्रसाद
डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
श्री त्रिवेणी प्रसाद

सूची

बिसय	लेखक	पन्ना
१ बीत गइल बरसात	श्री महेन्द्र शास्त्री	१
२ आपन इज्जत	श्री मनमोहन जयजोर	२
३ छाती के दरद	श्री जवाहर	६
४ हमार आज के हालत	श्री पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह	८
५ लहर	श्री शुकदेव प्रसाद सिंह	८
६ भइल भोर	श्री परशुराम एम. ए.	१०
७ [illegible] कुमार	श्री राम सिंह विशारद	११
८ जारत बा रे हाय करम	श्री रामबहादुर प्रसाद 'अरुण'	१४
९ कुणाल (काव्य)	श्री रामबचन लाल बी. ए.	१६
१० भोजपुरी के भूख (पत्र)	श्री मंत्री नव भारत पुस्तकालय	१८
१९ भोजपुरी भाइलोगनी	भोजपुरी समिति	१९
२० छठ के गीत	श्रीमती बृज कुमारी सिन्हा	२१
२१ धरती के भीतर का बा	श्रीकमला कान्त त्रिपाठी	२३
२२ पूरुब के गढ़ जमशेदपुर	रघुवंश नारायण सिंह	२५
२३ दीया आजु जराईं कइसे	पद्मदेव सिंह 'पद्म'	२९
२४ घाघ के बानी	श्री नर्मदेश्वर 'आजाद'	३०
२५ मेहरारू अउर मुँह	श्रीमती मनोरमा सिंह	३१
२६ बोरो	श्री बाण्डाबासिलवेस्का	३३
२७ दही-बाड़ा	श्री चटोर	३७
२८ आपन बात	संपादकीय	३९

भोजपुरी समिति

श्री रामनारायण प्रसाद, सभापति, श्री अब्दुल कयूम अनसारी आ श्री ब्रजकिशोर बहादुर उप—सभापति श्री पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली, प्रधान मंत्री श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' आ श्री बच्चन प्रसाद सिंह, मंत्री श्री भगवत प्रसाद, कोषाध्यक्ष, श्री रघुवंश नारायण सिंह, सम्पादक, श्री अलगू राय शास्त्री, एम, पी. सभापति, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमिटी, श्री तारकेश्वर पाण्डेय, एम. पी. मंत्री उ० प्र० कां० क०, श्री डाक्टर रामविचार पाण्डेय, श्री डा० कृष्णदेव उपाध्याय; एम. ए. पी. एच. डी. बाबा राघव दास, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, प्रि० बड़ागाँव, बनारस, प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिंह, श्री महेन्द्र शास्त्री, श्री शुकदेव नारायण, डाक्टर रघुवर दयाल श्री वास्तव, श्री नरेन्द्र कुमार जैन, पं० मुक्तिनाथ मिश्र, श्री भुवनेश्वर प्रसाद 'भानु' श्री रामेश्वर श्रीनाथ तिवारी, श्रीगणेश चौबे, चम्पारण, श्री शिव प्रसाद सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com

बीत गइल बरसात !

श्री महेन्द्र शास्त्री

बीत गइल बरसात !

बीत गइल बरसात भइया, बीत गइल बरसात !
डमरो वाला सड़ल मड़इया चूअत रहे दिन रात,
रोपनी में सड़-सड़ के अँगुरी-लात रहे हगुआत,
भइया बीत गइल बरसात !

सेत-मेत में खेत लिखाइल दुहा गइल देहात,
जेकर हमनी बएल हईं, ऊहे कइल घात पर घात,
भइया बीत गइल बरसात !

बेरहिन, दारा, दाल उरिद के, ई मकई के भात;
भादो के भूखल मजदूरा दूनू जून अघात,
भइया बीत गइल बरसात !

फरल फरहरी, लउका लउकल हरसिँगार फुलात,
नीचे निर्मल जल, ऊपर नभ, चाँद मधुर मुसुकात,
भइया बीत गइल बरसात !

---

www.bhojpurisahityangan.com

"आपन इज्जत"

लेखकः—श्रीयुत् 'मनमोहन' (जयजोर)

चइत के महीना। रात के दोसरका पहर। टह-टह उगल अँजोरिया आ पुरवइआ के झिर-झिर नीह बेयर। आसमान में सोनहुला फूल अइसन जोन्हियन के जगमगाहट आ चनरमा के झिलमिलात सुनर, चिकन दुधियवा किरिन। चारू ओरी एकदम सून-सनाटा; जइसे रात में मस्त होके सँउसे गाँव सुतल होखे।

गाँव के पुरूबारी— एगो बड़हन घर। ई घर इहाँ के जमींदार बाबू देवी सिंह के हवे। देवी सिंह जमींदार— जेकरा डरे गाँव थर-थर काँपेला, जेकरा रोब के मारे परजा-आसामी के टँगरी थरथरात रहेला, जेकरा एक-एक इशारा पर गाँव जवार के चोर—डकइत माथा झुकावेलन, इलाका के दरोगा-जमदार जेकर जी हजूरी कइ-कइ के आपन भाग सराहेलन, पुलिस, कल्कटर जेकरा मरजी के खिलाफ कबनों काम ना करेलन, जे बरिआरी दोसरा के असमत लूटल आपन धरम समझेलन, जे चानी के गोल-गोल दू-चार गो ठीकरा से दोसरा के इज्जत खरीदल आपन करतब जानेलन, जे दारु साराब के नीसा में टर्रर होके दोसरा के देखनउक बेटी-पतोह के जवानी से खेलवाड़ करेलन,—ओही देवी सिंह जमींदार के ई घर हऽ। दुअरिये पर नीम के एगो झांखाड़ गाछि बाटे, ओही के नीचे चार-पांच गो जावान सुतल बाड़न।

घर के भीतर मध आँगन में खटिआ पर पनरह-सोरह बरिस के नींद में मातल एगो जवान बिटिया सुतल बिआ। ई देवी सिंह के एकलवती बेटी मनोरी हई। इनकर महतारी त लइकाइयें में मरि गइली, एसे ई बापे के हीके पाला-पोसा के सेआन भइल बाड़ी। बापो मनोरी के जान से बढ़ि के दुलार करेलन। का मजाल कि भाई-भउजाइ भा घर के दोसर बेकत मनोरी के तनी डाँट के बोलसु। जे तनिको आँख देखावे देवी सिंह ओकरे आँख निकाले पर तइआर। पेआर-दुलार के दुनियाँ में चहके-फुदके वाली मनोरी लड़िकपन के देवार फान के जवानी के आँगन में आ गइल। तकिआ पर बिखरल मनोरी के काजर अइसन चमकत करिआ केश बुझाता जइसे आसमानि में मेघ छितराइल होखे आ चेहरा अइसन लागता जइसे बदरी के बीच में से चनरमा के जोत फइलल होखे चाकर ललार पर ईंगुर के बिन्दी अइसन बुझाता कि भिनसहरा का बेरा आसमानि में एगो जोन्हीं चमकत होखे। सब कुछ अइसन लागता जइसे जादू के देस में एगो परी ओंघइला में सपना देखि-देखि बिहँसत होखे।

एक ब एक पुरवइआ झरकि के तेज हो चलल आ ओही में बाँसुरी के बड़ी मीठ सुर सुनाए लागल। मनोरी एकबएक चिहुँक के उठ गइली हऽ जइसे सपना में चिहुँकल होखसु। ऊ धेआन से बँसुरी के गीत सुने लगली हऽ। सुनत-सुनत एकाएक उनकर दिल बेचैन हो गइल हऽ— जइसे केहू उनका मन के तार पर अँगुरी रख देले होखे। उनका ई नइखे बुझात कि ऊ सुतला में सपना देखत बाड़ी कि जागल बाड़ी। जब ऊ अपना के सँभार ना सकली हऽ त धीरे से उठ के केवाँड़ी खोललीं हऽ आ पुरूब वाली छवरि पकड़ि के

www.bhojpurisahityangan.com

धीरे-धीरे ओनिये जा रहल बाड़ी जेने से मन के बेचैन करे वाला बाँसुरी के ऊ दरदिला सुर आवत बा। सुन-सान छवारि पर उनका छागल के झंकार बुझाता जइसे भादो के महीना में झिंगुर बोलत होखे।

× × ×

गाँव के गोयड़े पुरुब बरम्ह बाबा के गाछि से थोड़ही दखिन हट के एगो जवन टीला बा, तवने पर बइठल २०-२२ बरिस के एगो जवान मरदाना बाँसुरी बजावे में मगन बाटे। देखे में साँवर जरूर बा, मगर रंग में चमक बा, मुँह पर पानी बा। डाँड़ में मइल मोट धोती पहिनले बा आ देहि में करिआ रंग के बँगला जामा। कपार पर सँउसे-सँउसे अँगुठिआ बार छितराइल बा।

गाँव के लोग ए जवान के भले ना चिन्हे, बाकिर बँगाल के कइगो सहर में तऽ ई 'बँगाल का जादूगर' के नाम से मशहूर बाटे। उहाँ के बच्चा-बच्चा एकरा से हिलल-मिलल रहेलन सन। कउड़ी कमछा से जब सात बरिस पर लौटल तऽ बँगाले के सहरन में जादू के तमासा देखा-देखा के आपन गुजर-बसर करे लागल। ए तरे तऽ उहाँ केतने जादूगर मारल-मारल फिरेलन, बाकिर एकरा खेल-तमासा के लोग पर जादे असर पड़े। एकर खास कारन रहे एकर मिलनसार सुभाव आ मीठ बोली। तवना पर बँसुरी बाजावे में एतना निपुन कि काठ के पानी बना के धऽ दे। सचहूँ, जवानी के बनल देह, एक से एक गुन आ मीठ बोली केहू के मन मोहे खातिर काफी रहे।

ऊ बँसुरी बजावे में एतना मगन बाटे कि ओकरा ई पाता नइखे कि सामने करीब आधा घंटा से केहू खाड़ा बाटे। उ दरद से भींजल गीत बजा रहल बाटे जइसे ओकरा दिल पर कवनों भारी-भरखम चोट पहुँचल होखे आ ओकरा घायल दिल के खून से ऊ गीत तरऽ-बतरऽ होखे। केहू के जल्दी बिश्वास ना होई कि गीत में एतना दरद भी उतारल जा सकेला। ऊ बँसुरी बजा रहल बा, ओकरा आँख से चुप-चाप लोर बह रहल बा, जइसे ओकर लोरे ओकरा दुख-दरद के कहानी कह रहल होखे अपना मौन भासा में। बजावत-बजावत जब ओकर राग टूटल हऽ, गीत थम्हल हऽ, आ जब ऊ सामने आँख उठवलसिहऽ तऽ ओकरा अचरज के ठेकान ना रहल हऽ जब ऊ देखलेसिह कि हे निसबद रात के सूनसान पहर में ओकरा सामने एगो जवान लड़की खड़ा बाटे। सिर पर बिखरल बार जवना में से उड़त सुगन्धी, चाकर लिलार पर चमकत बिन्दी, कसमस चोली, आ पिअर साड़ी गोर रंग, मोलायम अंग आसुनर चेहरा। ओकरा बुझाइल कि ओकर बँसुरी सुने खातिर सरग से परी उतरल होखे। ई बात सोच के ओकरा अपना ऊपर गरब भी भइल, डर भी लागल। गरब होखे के बात भी रहे काहें कि ओकरा ई बिस्वास ना रहे कि ओकरा राग में एतना खींचाव बा, एतना ताकत बा कि सुने खातिर सरग से परी उतर के चलि आई। सुनले तऽ ऊ लरिकाइयें से रहे कि बँसुरी में एतना जादू बा, एतना ताकत बा कि एकान्त रात में बजवला से सरग से परी आवेली सन मगर ओकरा आजु पाता चलल कि ओकरो राग में एतना खींचाव आ जादू बा। थोड़े देर तक तऽ ऊ भक रहे, बाकिर पीछे अपना के सँभार के उठलसिह आ पुछलसिह—

"अपने हमरा के माफ करीं, हम राउर आइल ना जननी हँ एसे अपने के बड़ी कष्ट भइल हऽ। अब कीरपा कऽ के ई बताईं कि रउरा के हईं ?" जब बाँसुरी के सुर रूकल हऽ, गीत के तार टूटल हऽ तऽ मनोरी के धेआन उचटल हऽ। अपना के सुनसान रात में एकांता जगह एगो जवान मरद

www.bhojpurisahityangan.com

के साथ देख के घबड़ा गइलीहा उनका समझ में ना आइल हऽ कि ऊ काहाँ बाड़ी आ ई जवान मरद के हऽ ? उनका ई भरम भइल ह कि कहीं सपना तऽ नइखी देखत ? आसमानि कि ओर आँख उठवली हऽ तले ऊपर से एगो सीन्हीं टूट के नीचे आके फेरू ना जाने कहँवा गायेब हो गइल हऽ। उनका मन में तरह-तरह के विचार उठे लागल हऽ। तलहीं बरम्ह बाबा के गाछि पर बइठल उल्लू जोर से बोललसिह। ई सब असगुन के बात देख के ऊ भय के मारे काँपे लगली हऽ, बाकिर बँसुरी वाला के आदर भरल मीठ बोली सुन के उनका तनी धीरज बन्हल हऽ। ऊ अपना के बड़ि सँभार के ओकर बात के जवाब देहली हऽ—" हम तऽ इहाँ के जमींदार बाबू देवी सिंह के बेटी हईं, बाकिर रउरा के हईं ? हम काहाँ बानी ? इहाँ कइसे अइनी हाँ?" एक ही साँस में ऊ केतना बात पुछ गइली ह। " अच्छा तऽ तूँ मनोरी हउ ? हम तनिको ना पहिचान सकनीह।"

अनजान आदमी के ई बात सुन के मनोरी के अउरी आचाम्भा भइल ह। ऊ फेर-घबड़ाइट ओ अचरज भरल बोली में पुछली ह—"बाकिर रउरा ई तऽ बतइबे ना कइनी कि रउरा के हईं ? हम काहाँ बानी ? इहाँ कइसे अईनी हँ ?"

"मनोरी, तहरा घबड़ाये के कवनों बात नइखे, तू अपना गाँवही में बाड़ू। हमहुँ कवनों चोर, डाकू, दनवा, दईंतर ना हईं। हम तोहार लड़िकाईं के साथी बिंदू हईं।"

ई सुन के मनोरी के अचरज आ खुसी के ठेकान न रहे। उ खुसी में भर के पूछलो-"बिंदू भइआ ?"

"हँ मनोरी बहिन !" सनेह भरल बोली में बिंदू कहलन हँऽ।——"कभी ऊ जामाना रहे, जब हम-तँ साथे खेलीं-खाईं सन। इहे टीला कभी हमार सुन्दर घर रहे। कभी एहीजा हमनी का खेली सन। ओह ! ओ दिन के इआद आवेला त आँख से लोर ढरके लागेला।" बिंदू के आँख साँचो लोर से तर हो गइल बाटे, गाल भींज गइल बाटे। आ जब बितला दिन के इआद आइल हऽ तऽ मनोरी के आँख में लोर भर आइल हऽ। बिंदू के हाथ के सहारा ले ले ऊ भी लोर बहा रहल बाड़ी।

"बाकिर मनोरी बहिन, भगवान से हमनी के ऊ सुख ना देखल गइल। डाही बिधाता हमरा बाबू जी के उठा लेहलन। हमरा के अपना साथे लिया के मझिला चाचा कौड़ी-कमेछा चलि गइले। ओह परदेश में हमरा चाचा के छोड़ के दोसर कवनो सहारा ना रहे। मगर काठ-दिल भगवान हमरा ओहू सहारा के छीन लेहलन। १२ बरिस के उमिर में ओह परदेस में हम केतना दुःख उठवनी।" कहत-कहत बिंदू फकफि-फकफि के रोवे लगलन ह। ऊ अपना के संभार के फेर कहे के शुरू कइलन—"कसहूँ सात बरिस के बाद कौड़ी-कमेछा से लौटनी त सीधे बंगाल चलि गइनी आ ओहीजा खेल-तमासा देखा-देखा आपन गुजर-बसर करे लगनी। हमरा जिनगी के कहानी में एगो नया पन्ना ओहिजा जोड़ाइल—जवना के सुरूआत तऽ सुनर रहे मगर ओकर अंत बड़ा दरदनाक बाटे। एतना कहत-कहत बिंदू एक बेर कांप गइलन।

मनोरी अपना साड़ी के कोर से आपन आंख पोंछ लेहलीह, जइसे ऊ दरदनाक कहानी सुने खातिर अपना के तइआर करत होखसु।

बिंदू एगो ठंढा साँस लेके कहल शुरू कइले हा—"मनोरी, उहाँ दीपा नाम के एगो बंगाली लड़की से हमार बिआह भइल। दीपा रानी हमरा जिनगी के आधार रहली। बाकिर बिधि के बिधान बड़ा गजब होला। जवना दीपा रानी के हम अपना परानों से बढ़ि के मानत रहनी ओही सीता-सावित्री अइसन

www.bhojpurisahityangan.com

सती-साधवी दीपा रानी के चाल-चलन पर हमरा कुछ सन्देह होगइल। हम आवेस में पागल होके उनकर हिंसा……" बिंदू के बोली भारी हो गइल हा, ऊ बिलख-बिलख के रोवे लगलन हाँ।

हत्या के बात सुन के मनोरी के त जइसे कठेया मार देले होखे। डर के मारे ऊ बिंदू के देहि में चिपक गइली ह।

बिंदू अपना के बड़ा संभार के कहे लगलन हँ—"मनोरी तहरा बिसवास ना होई—अब हमार परान दीपा रानी बिना केतना बेचैन बाटे। हमरा दीपा रानी के निठुर भगवान छीन लेहलन। ना…ना… हम खुदे अपना से दूर फेंक देहनी हाँ—भगवान अपना लेहलन। सब दोस हमार, सब कसूर हमार बा। मनोरी, आधा रात के एकांत में बँसुरी के राग में आपना दिल के दरद भर-भर के हम अपना दीपा रानी के पुकारिले। दीपा रानी बिना हमरा एको छन चैन नइखे। बेचैन होके काल्ह साँझ के हम बंगाल से इहाँ चल अइनी। हमार दीपा रानी……दीपा रानी……मनोरी……मनोरी बिंदू आवेस में पागल अइसन बक रहल बा। मनोरी सिसक रहल बाड़ी। बेआर चल रहल बा,…धीरे-धीरे भिनसहरा हो रहल बा।

× × × ×

अपना आदत का मोताबिक बाबू देवी सिंह खूब भिनसहरे उठ के अपना लंगोटिआ इआर आ नामी लठिधर बाबू रामखेलावन सिंह के साथे घूमे जात रहलन हाँ। पुरूब वाली छवरि पकड़ के दूनों आदमी गते-गते चलल जात रहल ह लोग कि एक ब एक बिंदू के आखिरी आवाज सुन के ठमक गइल ह लोग। देवी सिंह सोचे लगले हँ ई के ह जे हमरा बेटी के नाँव ध-ध के पागल अइसने चिल्लाता।

ऊ छवरि छोड़ के टीला के ओर बढ़ चललन हँ; आ पीछे-पीछे चललन हँ साथ में सउँसे लाठी लेहले बाबू रामखेलावन सिंह।

बाबू देवी सिंह के करोध के ठेकाना नइखे—जब ऊ सामने देखलन हँ कि उनकर बेटी एगो अनजान जवान के देह धके सपकल बाटे। ई देख के उनका देह में आग लाग गइल ह। ऊ भूखइला बाघ अइसन गरज के बिंदू से पूछलन हँ—"रे-ते कवन हवस रे?"

"हम जादूगर हईं जी बंगाल के जादूगर।" जा तु आपन रास्ता देख!" दुःख के आवेस में बिंदू के ई ना बुझाइल ह कि ऊ केकरा से का कह रहल बाटे।

मनोरी त डर के मारे अलगे काँपे लगली ह। बिंदू के देह छोड़ के ऊ छटक के दूर खड़ा बाड़ी। बिंदू के जवाब सुन के देवी सिंह के आँख में खून उतर आइल ह। ऊ दाँत पीस के रामखेलावन से कहलेह—"का देखतार हो रामखेलावन—मार ना सार के खतम कर द।"

रामखेलावन सिंह त उनका हुकुम के तावेदार हउवन। इसारा पावते उनकर लाठी हवा में उड़े लागल ह।

बिंदू के कपार फूट गइल बाटे। खुन के धारा बह रहल बा। ऊ जमीन पर तड़प रहल बाटे।

जब मनोरी से ना सहाइल ह तऽ ऊ हिम्मत कऽ के पुछली ह—"बाबूजी, ई गरीब राउर का कसूर कइले बाटे जे रउरा बेचारा के जान लेत बानी?"

सवाल सुनत ना सुनत देवी सिंह के चटकन मनोरी के गाल पर तड़ाक से परल हऽ। ऊ गरज के कहलन हँ—"हमरा मुंह में ते करिखा लगा के पूछतारे कि ए गरीब बेचारा के का कसूर बा…… बंस के कलंक……हारामजादी……छोकड़ी" आ दनादन चार-पाँच थप्पड़ अउरी मारदेलन हँ।

(बाकी पन्न ७ प)

www.bhojpurisahityangan.com

॥ छाती के दरद ॥

—:जयाहर:—

माघ के कँपावे वाला जाड़ा होखे चाहे जेठ के आग लगावे वाला गरमी, आउर कहीं आग ना मिले त ना मिले बाकिर चहेटन पांड़े के बोरसी तऽ सुखला सावन भरला भादो तलफले रहे ला। चिलम पर चिलम बोझाते रहेला, दम पर दम लागते रहेला। कवन अइसन अभागा दिन होई जाह दिन एक भर दू भर गांजा ना फूँकात होखे– भांग त कुत्ता कउआ ना पूछे। कुआर का कुत्ता खानी लोग उनकर पाछ ना छोड़े।

चहेटनो पांड़े कवनों मँगरू ढोंढ़ाई नइखन, सपकड़न घरले जजमनिका बा, दुआर पर दुगो रेल का इंजिन खानी चले वाला बैल बाड़न स आ एगो भर डांर के छंठी विया जवना के ऊ 'चेतको' के कान काटे वाली बुझेले। पढ़े लिखे के त कवनों बाते नइखे, आजतक भाठा ना छुवले होइहन, बाकिर मजाल कहीं कि केहू उनका के शासतर-वेद का बात में पछाड़ दे। बरियात में शास्त्रार्थ करे खातिर ठेहुनिया जाले तऽ बड़ा-बड़ा अखड़िया पंडित लोग के अकिल गुम हो जाला।

एतवार के दिन रहे, हम घुमते-घुमते ओनिये काओर चल गइनी। गोल जमल रहे, साफी भँवात रहे, हमहूँ तनी बतकही सुने खातिर अकलू काका के घुसका के बइठ गइनी। चिलम घुमते-घुमते हमरो ओर आइल बाकिर हम कहनी कि हमरा ई ना चले। चहेटन पांड़े दम खींचत-खींचत बोलले:– बबुओ, तनकियो सा सूंघले शंकर भगवान के बूटी नु हऽ। हमनी का ना रहला पर छलनियां के मर जइबस त ई नानु मिली। दऽ हो अकलू इनको के दऽ केकरा राम ना भावस। बाकिर हम केहुँगति कगरिया के निकल गइनी। बतकही के गेंठरी खुलल बात पर बात उगिलाये लागल। एही बीच में धरमदेव पांड़े माथ पर धोती के चाक नियर मुरेठा बन्हले, कान्ह में उजर छाता लटकवले आ हाथ में सात गुला के एगो बोहल डंटा लेले हकासले पिआसले आके धस दे खटिया पर बइठ गइले। हमार त मिजाज छत्र-पांच में पड़ गइल बाकिर पाछे पता लागल कि काल्ह मोकदमा के तारीख रहे छपरा से आवत बारन। "काहो धरमदेव का भइल ह जे अरुआइल पीठा नियर मुँह कइले बाड़ऽ" चहेटन पांड़े बोलले। अरे होई का बाबा, एह घड़ी बड़ा अन्हेर बा। पटिदार का गरदन पर छूरी चला के अबेली सुका थाना के चढ़ा दऽ तऽ ऊ सोझे गाय के भँइस कह दिहें सऽ"। धरमदेव पांड़े एके सांस में सब कह गइले। "कहत रहल लोग कि साराज होई त बाघ बकरी एके घाट पानी पीही, केहू का पड़ला खर पर केहू लात ना दी। बाकिर इहाँ त आउरो जवाना में आग लाग गइल। आँख के देखल साँच बात कहे में लोग रोपेया माँगत बाऽ जवन करम ना करे के तवन-तवन करम कइनी, कतना निहोरा कइनी, दू लोटा घीव पहुँचवनी, दू दिन दू कड़ाही दही देनी तबहुँओ नवगो टिपोर करत बा लोग। दरोगाजी अपना आँख से देख गइले कि हमरा खेत में से मकई काट के अपना घरे धइलेबारन बाकिर दस गो रोपेया चेंटियालेले तऽ पुरुब के पछिम कहे में तनिको

www.bhojpurisahityangan.com

आइस ना लागल हऽ। आज सोभे गंगा हेल गइले हऽ एले त उहे सरकरवां नु निमन रहल ह ओकरा राज में अतना अन्हेर ना रहल। का कहीं जबाना बदल गइल "अबले चहेटन पांड़े केहूँ गतिया मुँह पर लगाम बंधले रहले बाकिर कुछ कहे खातिर ऊनकरो मन खुड़ियात रहे। उहो मुँह से पच दे खइनी उगिल के बतकही ढेसरावे लगले "अरे बबुओ, ई धरती केहुए केहू का एकबाल पर टिकल बारी ना तऽ कब ना इनका फाट जाये के हऽ। हई अचलन नानु सुनल हऽ" अब का दो एगो बेसी टरनी (वेसिक ट्रेनिंग) इसकोल खुलल बा, नाया पर। अरे भाई! ओकनी के आग में मूतल देख के आदमी मार मलछ के रह जाता। जवन करम हमनी के पुरखा पुरनियाँ लोग ना कइले रहल लोग तवन-तवन करम तऽ ई आज काल्ह के छोकड़ा करत बारन सऽ। भला राजपूत, बाभन, डोम, चमार कहिआ एक साथे खइले रहल। तवन-तवन तऽ अतहते अब के पढ़ुआ लोग करत बा। अंगरेजवा रहले हस तऽ केहू का धरम-करम पर केहू आँख ना उठावत रलख। बाकिर जहिया से ई गँधिया के आँधी उठल तहिया से केहू का जात-पाँत के कवनों ठीक नइखे। का मजाल जे किनहूँ छोट जात हमनी का सोभा खटिया पर बइठ जास, खड़ाऊँ पेन्हलेस. देह के रोंआ-रोंआ बीन लींसऽ। बाकिर अब के त ई छोकड़ा लोग अपना साथे कवनों जात के बइठावत बा खिआवत बा। एगो साफ मिरजइ पेन्ह ली लोग, हाथ में दूगो किताब जांतली लोग त समझेला लोंग कि हमरा आगे सभे चमलेटे हऽ।

अब ए लोग के अगरधत्त आ धाधाइल सब छुटे ला। देखीं जे कबले ई टिपोर निबहेला। सांचे कहतानी हमरा एह लोग के चाल फुटलो आँखी ना सोहाय। बाप दादा के इज्जत के कनखा टेढ़ क के ध देलस लोग। अरे ई सोराज भइल कि दुनिया के भीठ मिलावे पर लागल बा। आवऽ धरमदेव एक दम मारलऽ।" आ गांजा गठे लागल। ई सब पिंगल सुनत-सुनत हमरा कान के जान जात रहे केहूँ गतिया उठ के भगनी राहो में सोचत रहीं ए लोग के मन के गुलामी ना गइल हऽ।

बाकिर ई बात रह-रह के अबहियों हमरा छाती में दरद देवेला, घाव नियर टभकेला कि एहराज में बड़ा अनहेर बा, आ एले अंगरेजवे निमन रलेहसऽ।

(५ पन्ना क बाकी)

चोट खाके मनोरी फफकि-फफकि रोवे लागल। देवी सिंह के थप्पड़ से जेतना चोट ना लागल रहे उनका बात से ओकरा से बढ़ि के चोट ओकरा दिल पर लागल रहे। आखिर ओकरा सब से कीमती चीज चरित्र पर झूठ कलंक लगावल रहे आ कलंक लगावे वाला भी ओकर बाप रहलन।

बिंदू के लास के उहें छोड़ के देवी सिंह आ रामखेलावन सिंह मनोरी के साथे अपना घर की ओर लवटल ह लोग।

जवना देवी सिंह के दोसरा के इज्जत लूटे में तनिको हिचकिचाहट ना होला उहे देवी सिंह आपन इज्जत लुटइला के संदेह भर भइला से एगो निर्दोस गरीब के जान मार देलन हँ।

पुरवइया हवा धीरे-धीरे बह रहल बा पुरुब के कोर पर लोही लाग रहल बा।

टीला पर परल बिंदू के लास दुनिया के एगो सत्य के परदा खोल रहल बा—

www.bhojpurisahityangan.com

हमार आज के हालत

[श्री पांडेय जगन्नाथप्रसाद सिंह]

गाँधी जी के नाम अब देवता के नाम बाटे,
उनकर सिखावन अब कहाँ केहु मानता।
सत्य आ अहिंसा के त नाम सभे लेत बाटे,
मानी ओकर इहवाँ के लोग कहाँ जानता?
सब केहु छोट छोट बात में बोलेला झूठ,
तबो अपना अपना के जुधिष्ठिरे बखानता।
झूठ-झूठ मामिला में इहवाँ के लोग सब
निमन-निमन लोगवा के झूठमूठ सानता॥
भाई के ना भाई पूछे बाप के ना बेटा पूछे,
रुपया आ धन के दामाद सभे मानता।
आपस में केहु के ना केहु से पटत बाटे,
धरम इमान अब कहाँ केहु जानता।
बाँध खातिर खाद खातिर झूर आ डंड़ार खातिर,
लाठी सोटा लेइ-लेइ गेंग सभे ठानता।
चोरी बेईमानी अब रोज-रोज होखे लागल,
चोरने के साधू सब लोग आज मानता॥
चोरी होता खेत खरिहान में बाजारवा में,
रेल में जहाज में आ राह बाट हाट में।
अन्न में आ कपड़ा में लोहा के सामानावाँ में,
चीनी छोआ नून तेल सोना चाँदी पाट में।
डाकघर आफिस इसकुलवो में चोरी होता,
चोरी होता दिन रात न्याय के बाजार में।
कहाँ तक कहीं हम चोरो आ चमारी आज
खुल के जे होता सरकारी दरबार में॥
बी० ए० एम० ए० पास लोग नोकरी खोजत चले,
अपर मिलल पासे डेढ़ सौ पावता।
रुपया पइसा घरे के जे रहे से खरच देले—
पढ़ही में, पढ़ल लोग गीत अब गावता।
देह सुकवार भइले मोट काम होत नइखे,
पढ़ला का बाद अब जेने तेने धावता।
काम त मिलत नइखे पेटवा भरत नइखे,
पढ़ल लिखल लोग डमरू बजावता॥

लहर

शुकदेव प्रसाद सिंह

"बाबूजी.....एक पइसा! एक पइसा बाबूजी....."

ओकरा रोआँ-रोआँ से गरीबी के गंध उड़तरहे। सड़क प चहल-पहल रहे। लोग आपना—आपना मउज में मस्त रहे। ओकरा लाचारी प केहु के धेयानो ना जात रहे। ओकरा आगा से लोग कतरा के निकल जाय। फेर ओकर कँहरत आवाज ओह चहल—पहल में मिटिक जाय ...।

"एक पइसा बाबूजी।" एगो खद्दर धारी के आगा जाके कहलस। चलहट.....कमाय के नइखे। हट्टसन देह लेले काहे भीख माँगत फिरत बाड़स जो... आगे बढ़।,, खद्दर धारी महोदय सान से बोललन। "एक पइसा मालिक.....।" दाँत खिसिर के फेर उनका से कहलस। "हट सामने से.....आदमियो ना चिन्हाय?" खीस से भूत होके बोलत रहन।

www.bhojpurisahityangan.com

आँखिन से खीस के लहर लहरात रहे। येह बेइज्जति से पूरा रोसियए गइल रहन।

बाकी ओकरा येह से का? अइसन—अइसन अँइठ सुने के त ओकरा बान परल रहे। हाँथ फैलवले फेर आगा बढ़ल—,, बाबूजी एक पइसा···। तीन दिन से भूखे बानो जा······बाबूजी बेराम मतारी खइला बिना मर रहल बिया एक पइसा···दया क दीं।

चलत आदमियन के दल के लालच से देखत, हाँथ फैला के, उघारे-निघारे, आगा बढ़ल चल जात रहे–बाकी चारो ओर से झिड़िकी छोड़ पइसा के दरसो ना होखे। बारह बरिस के लइका, अन्न बिना ठट्ठी-ठट्ठी लउकत, आँख धसल, गाल पचकल, देह में गुदरा-गंथले चारो ओर छुधा खातिर ठोकर खात फिरत रहे। नाँव ओकर केहुना जानत रहे। केहु के ओ से मतलबो ना रहे।

× × × ×

चउक प एगो पकड़ी के पेड़ रहे। सड़कन के दूनो ओर दू महला-तीन महला मकान रहन स, नीचे कईगो जिनिस के दोकान रहे। दु महला के छजन प आदिमी के बाजार रहे।

ओह पेंड़ के जर त गुदरा ओढ़ले खाली ठठरी भर देह अउरी एगो मेहरारू ओठंग के कँहरत रहे। देखला से बेमरिहा मालूम होत रहे। बोले के कूवत ना रहे–परल-परल कँहरत रहे।

ओहिजे छतन प बिजली के रोशनी बिहँसत रहे। तितली अइसन तिरिया छलकत रही स। राह-गिर के आँख; लुक–छिप के ओने छलक जाय। बाकी ओह गरीब के ओर अनजान में भी केहु के नजर चल जाय त घिना के मुँह फेर लेवे। कतना फरक रहे दूनो में!

एगो लाचार, बेबस, गरीब···। जेकरा एक पइसा मोहाल! आ एगो के आगा रोपेयन के झिटिका बरोबर मोल ना!! एगो के खइला-खइला बिना बाया छछने, एगो के खाते-खाते दवाइन के जरुरत! पइसे के चलते एगो कहाय करम-जरु दलिदर, गरीब आ एगो भाग्यवान अमीर!!

बेमार भिखारिन एक टक से सड़क के चहल-पहल के देखत रहे। बिजली के रोशनी में ओकरा आँख के छलकत लोर साफ चमकत रहे। तबले उहे लइका धउगल आइल–पेड़ के पास! भिखारिन चिल्ला उठल·········" मुन्नू····· मून्नू···।"—

मुनुआ कूद के आके ओकरा सामने खड़ा हो गइल। भिखारिन ओकरा के अपना छाती प खींच लेलस। दुलार से छमहिनवा लइका अइसन मूँड़ी थपथपावे लागल। दुलार के शब्द, हीरा, मोती, बचन अउर सुग्गा कह के चूमे लागल आ एक ओर आँख के कोर से चुवत लोर लेदरा के भिजा देलस। लइका मतारी के दुलार में सरग–सुख के आनन्द लेत रहे। बाकी मतारी कई दिन के उपासल खियाल भइला प हूक करेजा कूटे लागल। "माई·····।" ओकरा बोली में हिरदय के दुख खिल-खिला के हँस देलस। मतारी प्यार में पागल रहे, दाढ़ी पकड़ले अपना सुखसागर में गोता लगावत बोलल—"का बचन, हमार हिरदय के अरमान, बेटा······।" कहत रहे आ ओकर ओठ काँपत रहे।

"दू पइसा मिलल बा माई खाले, कुछ......।" मुन्नू गर्त्तो से कहलस।

पेट के इयाद परते ओकरा प पहाड़ टूट पड़ल। छाती धके बइठ गइल आ सोंचे लागल—हम खाईं आ हमार हीरा अइसन बेटा ताको······। ई चंडाल पेट ना रहीत त कवन बात रहे। ना हम ना खाइब।

मुन्नू फेर कहलस— खाले माई······।"

"ना हमार लाल। भूखनइखे लागल ···, जा तेँहू खाल।" कहत-कहत लाचारी के दू ठोप लोर ओकरा गालन प छटक गइल।

"तीन दिन से भूखे बाड़ीस···आ भूख नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

भइल भोर

श्री परशुराम, एम० ए०

भइल भोर !
ई अजब रंग,
ई अजब ढंग;
पसरल लाली उत्तर-दखिन,
छू लिहलस पच्छिम के भी छोर
राग पाराती के जागल,
सब रोग-सोग के बेरा भागल;
कतहूँ मैना, कतहूँ खंजन
कहूँ भइल सुन, बुलबुल के सोर।
चारो ओर खुसी बगराइल,
गली-गली अगराइल;
डगर-डगर पर आँचर झलकल
आइल सुन के भोर।
बिनु बदरा सोभे आसमान,
आसन पर राजल अजब सान,
देख नाच-नाच के मगन भइल
मनवाँ के हमरा मोर।
भइल भोर।

(६ से आगे)

लागल···।" कहत मुन्नू के गला बाझ गइल।

'ना तूहीं खालऽ···हमार कवन—नाव किनारा लागल बा, भूख नइखे, तूहीं खालऽ···। लोर पोंछत आसमान देने ताकत कहलस।

'खाले माई···।" कहत-कहत रो देलस—"तू त तीन दिन से नइखिस खइले हम त काल्ह खइलहीं रहीं।"

"अच्छा जा अबही कुछ माँग ले आव त खायके।" मुन्नू के माई उदास होके कहलस।

कहत ही मुनुआ दउग के एगो बंगला के सामने खड़ा हो गइल—"एक पइसा बाबूजी···।" दुआरी प दूगो चपरासी पहारा देत रहन स। भीतर 'टी पार्टी' चलत रहे, आ कवनो साहित्तिक भा राजनीतिक बिसय प बहस चलत रहे। तब ले फेर आँख में लोर ले-ले उदास मन से कहलस—"बाबूजी एक पइसा·····एक पइसा मालिक···।"

ऊ का जानत रहे कि बकुला के पाँख अइसन साफ आ रौनकदार सरीर के भीतर हिरदय नइखे? फेर कहलस—"बाबूजी एक पइसा, कय दिन के भुखासल बानी···।"

तबले चाय पिअत एगो बाबू के कान में ओकर आवाज गइल, ऊ चपरासी प बिगड़ उठलन "हटाओ इसको, "यहीं भिख माँगने की जगह है, ऐसी देह लेकर भीख माँगता है।" चपरासी हटावत रहे, बाकी ऊ ना हटल। चपरासी बाबू से कहलस। ऊ बिगड़ के कहलन—"क्या देखता है, नहीं हटता है तो, खींच कर बाहर फेंको।"

चपरासी हुकुम सुनते झटकि के बाहर फेंकलस। ओही घरी रोड प मोटर आवत रहे, मुनुआ पहिया के नीचे पर गइल।

एके मिनट में अइसन बात देखके मुनुआ के माई बाई में उठल आ पागल अइसन धउग के आके, मुनुआ के लहू-लुहान सरीर प गिर गइल। काँपत हाँथ से दाढ़ी धके चिचिआइल—"बबुआ···हमार लाल।"

पेट के लहर त रहले रहे—बेटा बियोग के लहर कमजोर सरीर के दबोच देलस। ओकर आँख मूँदा गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

बिजय कुमार

श्री राम सिंह बिशारद

अरे बाप जान गइल। दरोगा जी एकै दफे में मार डालऽ, अब सहल नाहीं जात हौ कहत-कहत रसवन्ती के मुँह से खून गिर गयल। खून देख के दरोगा जी के हाँथ क बेंत कुछ नरम पड़ल। तीस बरिस क रसवन्ती पच्चास क मालूम होत रहल। दुनियाँ ओके पागल कहत रहे, लड़िका ढेला पत्थर मारें, साड़ी खींच लें। खाये पीए क फिकिर बिल्कुल छोड़ के ऊ जौन छोटा लड़का के देखे 'बचवा' कह के दऊड़े। कई जगह ऊ बुरी तरह मार खा गइल एक बहुत सुंदर लड़िका के गोदी में उठा के दौड़ पड़ल औ मोर बचवा, कहाँ रहले कह के लगल चुम्मा लेवे ओकर मतारी बाप फल लेत रहें। ऊ जबे अपने लड़िका के रोआई सुनलन तब पगली के पुलिस के हवाले कर देहलन। थाना में दरोगा जी लगलन बेभाव क पिटाई करे। रसवन्ती क हालत खराब देख के दरोगा जी अस्पताल में डाक्टर के खबर देलन। डाक्टर साहब अस्पताल में ओके भरती कर लेहलन औ ओकर दवाई-बीरो होवे लगल।

मार खात-खात ओकर सब देह सूज गयल रहे, बहुत जगह नील पड़ गयल रहे। खैर अस्पताल में ओकर देख भाल होखे लागल। एक दिन दरोगा जी अस्पताल में अयलन औ रसवन्ती से हाल पूछे लगलन। रसवन्ती खटिया से उठ के दरोगा साहब क पैर पकड़ लेहलस औ रोके कहे लगल दरोगा साहब! डाक्टर साहब से कह के हमें जहर दिया द। हम जीए नाहीं चाहित। हमार जिन्दगी अकारथ भइल बा। या तो हमके जीवन भर के लिए जेल में डाल द ताकि हम दुनियाँ में केहू से मिल ना सकी। छोटा बच्चा जब भी हम देखीला हमें पागलपन सवार हो जाला, हमार इहें मन करेला कि उठा के गोदी में ले लेई औ खूब चूमी। अपने आँख क ओट न होवे देई'। दरोगा साहब क हृदय द्रवित हो गयल अउर ऊ कहलन कि "घबराओ मत। पहले तुम यह बताओ कि क्यों तुम किसी बच्चे को देख कर विह्वल हो जाती हो। क्या तुम्हारे परिवार में कोइ नहीं है? और अगर हैं तो वे तुम्हारी खोज क्यों नहीं करते?" दरोगा जी कुर्सी खींच के बइठ गइलन औ रसवन्ती कहे लगल।

आज से अट्ठारह बरस पहिले क बात हौ। हमार बिआह बनारस के एक धनी परिवार में भयल रहे। पिता हमार गाँव के जमींदार रहलन औ हम ओनकर एकै बिटिया हईं। पिताजी के मरले करीब आठ साल बीत गयल। हमार पति इहें विस्वविद्यालय में बी. ए० में पढ़त रहलन तब हमार शादी भयल। चार साल तक हम लोग जीवन क कुल सुख भोग कइलीं। हमार सास और ननद बड़ी धार्मिक ख्याल क रहें.अ पुराना बिचार रक्खे वाली। लेकिन पति नया ख्याल क रहें। ओनहीं के कृपा से हमहूँ थोड़ा पढ़े-लिखे सिखलीं। एक बार हम बहुत सख्त बेमार पड़ गइलीं ओम्मे ननद बेचारी हमार बहुत मदत कइलन। रात दिन हमार देख भाल करें औ सेवा टहल भी करे में न सकुचाय। जब हमार तबीयत कुछ-कुछ सुधरे लगल तब ऊ बैद जी से हमरे खास बेमारी क बात चीत कइलिन। बैद जी दवाइ देहलन, लेकिन कुछ नतीजा नाहीं भयल एकरे बाद हमार ननदोई अइलन। ऊ राय देहलन

www.bhojpurisahityangan.com

कि इलाहाबाद में दवाई करावल जाय, ऊहाँ एक लेडी डाक्टर अच्छा जानकार हौ।

हम इलाहाबाद गइलीं और पन्द्रह दिन तक ननद के घरे रह के दवाइ करऊलीं। उहाँ हमरे पति क भी इलाज भयल। हम लोग दू-चार दिन आउर रह के घरे चल अइलीं। भगवान क मर्जी, इहाँ अउते हमें खुसी मालूम भयल। लेकिन ई खुसी बहुत दुख देहलस। तीन महीना भी पूरा न भयल कि हमें मलेरिया बुखार आ गयल। बोखार १०३, १०४ डिगरी तक चढ़ल औ नतीजा ई भयल कि सब खुसी मट्टी हो गयल। जब गर्भ गिर गयल तब बुखार भी अपने आप उतर गयल। तब से हमार दिल बहुत दुखी हो गयल। तीन बरस तक फिर कुछ नाहीं सुनायल। हमरे पति भी एहर-ओहर लोगन से राय बात लें औ जे जउन दवाई कहे तउन लेआके खाएँ। सास से कोई कहलस कि तनी उपरी फसाद भी देखावे के चाही। उहो कयल गयल। मनउती, पूजा-पाठ, बरत वगैरह सब कइलीं। केहु देवता-पितर के नाहीं छोड़लीं। हमार पति ई सब पर बिस्वास न करें लेकिन संतान क लालसा बड़ी बुरी होले। बेचारे लाचार होके करें सब कुछ लेकिन संतान नहीं भयल।

हमरे सामने क लड़किन दूदू बिटियन क मतारी हो गइलिन लेकिन हमार भगवान सुतल रहलन। सबके ई बिस्वास हो गयल कि हम बाँझ हईं। धीरे-धीरे बियाह भइले पंद्रह बरस बीत गयल। महल्ले टोले क बुढ़-पुरनियाँ लोग हमरे सास के समझउलिन कि हमरे पति के दूसर बियाह कर दीहल जाय। सास मान गइलिन लेकिन हमार पति नाहीं सुनलन। उन्हें बिस्वास रहे कि हमें संतान जरूर होई चाहे जब हो। सास अउर हमरे पति में बड़ी बहसा-बहसी भइल। हमार पति दूसर सादी करे के कब्बौ हामी नाहीं भरलन। एक बात हमरे ससुर साहब ई कहलन कि लखनउ मेडिकल कालिज में चल के आपरेशन करावल जाय। हमरे हा अइसन एक आऊर औरत क हाल रहे तो ऊहाँ आपरेशन करउले से ओकर सब रोग ठीक हो गइल औ ओके ए बखत तीन लड़िका हउवन। ठीक ओही बखत एक साधु महात्मा क बात निकल पड़ल। अंत में ई राय भयल कि जरा ओनहूँ से कुछ दुःख बिपत कहल जाय। हम लोग ई तय कइलीं कि अतवार के चलल जाइ।

दुसरे दिन पता लगल कि ओन्हें पुलिस गिरफ्तार कर लेलस। एक चमाइन के साथ जबरदस्ती करत रहें। ई सुनके हमरे पति देवता एक अच्छा खासा भाषण दे डललन। एही तरह से दिन बीतत गइल। एक दिन हमें कुछ कय मालूम पड़ल और मुँह में पानी भर-भर आवे। हम समझलीं अनपच हो गयल होई। लेकिन जब कइ दिन तक लगातार सबेरे-सबेरे मुँह फीका-फीका लगे लगल तब हम अपने पति से कहलीं। ऊ सुनके बड़ा खुस भइलन। कहें ईश्वर करे तोहार अइसहीं मुँह फीका होत चल जाय औ एक दिन देह भी पियर हो जाय। दवाई बीरो नाहीं गयल लगल। चार महीना जब बीत गयल तब सास ससुर सबकै ऊमीद हो गयल कि अब कोई हर्जा नाहीं हौ। सास हमसे काम न करावें बहुत चले फिरे क मना करें आउर अब आपसे का बताई बहुत-बहुत समझावें। हमरे पति के खुसी क पार नाहीं रहे। दुनियाँ भर में सबसे बयना बाँट अइलन। ननद के पास हमसे छिपा के चिट्ठी लिख देहलन उहाँ से बधाइ क जबाब मिलल।

जब सात महीना बीत गयल तब हमलोग आपस में राय बात करे लगलीं। हमरे पति महराज तो कहें कि बेटवा होइ त बिजय कुमार नाम रक्खल जाई औ बिटिया होई तो राज कुमारी। कल्पना के

www.bhojpurisahityangan.com

राज में हम लोग बिचरे लगलीं। केके-केके साड़ी दिआई, कइसन धोति रंगाई, कै दिन सहनाई बाजी, छठी के नाच होई कि बरही के कि दूनों दिन? मतलब ई कि बेमतलब क बात धतिया के ख्याली पोलाव पकावे जाय लागल। धीरे धीरे दिन नगिचाए लगल अउर एक दिन ऊ दिन भी आयल जब हम लोग क लालसा पूरा हो गयल। सबसे आँख बचा के हमार पति सउरीं में अइलन और विजय कुमार के उठा के चूम लेहलन। ओनकर पैर जैसे धरती में पड़ते नाहीं रहे। अइसन मालूम पडे जइसे दुनियाँ क निधि पा गयल होंय। छट्ठी बरही दूनों दिन नाच रंगल औ मन क ककूलत निकाल लिहल गयल। सबके देहले-लेहले के बाद जेवनार भयल ओर ननदन क बिदाई कयल गयल। जे जउन लायक रहे ओके ऊ दीहल गयल कोई क मन तोड़ल नाहीं गयल।

'हमार बिजय कुमार तीन बरस क भइलन' कहत-कहत रसवन्ती क आँख गीला होये लगल 'तो ओनके बस्ते तीन पहिया क साइकिल खरीद के आयल। ओप्पर लाल हमार एक्को दिन सुभित चढ़ नाहीं पउलन कि बीमार पड़ गइलन। पति हमार अकास-पताल एक कर देहलन लेकिन हमार हीरा निकल गइलन। हमार बिजय हाँथ से बे हाँथ हो गइलन। मट्टी परवाह करके जब ऊ अइलन तो अइसन मालूम पड़े जइसे कोई खून चूस लेले हो। देंह एक दम पीयर हरदी के तरे हो गयल, अइसन मालूम पड़े कि कै बरस क बिमरिया हउवन। तिरात्री करके एक दिन ऊ घर के बाहर निकललन तो फिर ओनकर आज तक पता नाहीं हौ कि कहाँ हउवन। कहत-कहत रसवन्ती फूट-फूट के रोवे लगल। दरोगा साहब के आँख में भी पानी मालूम पड़ल। रूमाल निकाल के मुँह पोंछलन अउर पुछलन कि तुम्हारे पति का नाम क्या है और तुम्हारी जाति क्या है? मैं गाजीपुर से बदल कर जब बलिया गया था तो वहाँ एक कैदी से मुलाकात हुई वह अपनी जान देने जा रहा था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। बाद में पता चला कि उसे तीन साल की सजा हो गई। उसने भी कुछ ऐसी ही बयान दी थी।

'रसवन्ती चौंक के उठ बइठल औ कहलस कि आप बलिया कब गयल रहलऽ'। दारोगा ने कुछ सोच कर कहा 'करीब दो ढ़ाई साल हो गए ठीक याद नहीं हो सकता है ज्यादा भी हो गया हो'। 'हम ओन से भेंट कर सकीला'? रसवन्ती पुछलस 'हाँ, हाँ, एक दरख्वास्त देनी पड़ेगी, तुम मुलाकात कर सकती हो। लेकिन अगर वह तुम्हारा पति न हो तब?, दारोगा कहलन। अइसन मालूम पड़े रसवन्ती आखिरी बात नाहीं सुनलस। कहे, दरोगा साहब हमें कइसों उहाँ तक पहुँचाद। हम एक बार भर आँख ओन्हें देखे चाहीला'।

दूसरे ही दिन रसवन्ती के दरोगा साहब एक आदमी के साथ बलिया भेज देहलन। बड़ी-बड़ी अरमान लेले रसवन्ती जेल के फाटक पर खड़ी भइल। दरखास दीहल गयल औ हुकुम भयल कि दूसरे दिन सवेरे ऊ भेंट कर सकेले। रात भर रसवन्ती के नींद नाहीं आयल। रह रह के आसमान ताके अउर भुन भुनाय कि बड़ी लम्बी रात हो गयल हौ। मन ही मन खूब खुस हो, कभी रोवे लगे, कभी उदास होके असमान ताके औ लम्बी-लम्बी साँस ले। न जाने का कहे औ खुदे जबाब देवे। राम राम करके सवेरा भयल। जेल क फाटक तो ओकर देखले रहल जाके तड़कहीं खड़ी भयल। पुलिस से कहे कि हमें भेंट करे के हुकुम भयल हो हमें भीतर जाय दऽ। पुलिस जबाब देहलस कि 'आठ बजे के बाद भेंट होगी जाओ अभी'। उहें ऊ सुसुके लागल औ फटकवे पर बैठ गइल। एक

(बाकी पन्ना १५ प)

www.bhojpurisahityangan.com

जारत बा रे, हाय, करम ।

रामबहादुर प्रसाद 'अरुण'

(१)

दिल के बात कहीं का हम ।
बाप-मतारी पाल पोस के,
कूर देलस सेयान ।
सिच्छा भी मेहनत से देके
कइलस बुद्धीमान ॥
फूट गईल पर भाग आजरे,
रोवत बानी हम हरदम ॥
दिल के बात कहीं का हम ॥

(२)

कालेज में भरती जब भइलीं,
दिल में उठल हुलास ।
आसमान के अन्तिम चोटी-
पर जा बइठल आस ॥
सोचत रहलीं सदा यही रे,
डिप्टी होखब कम से कम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

(३)

डिग्री लेके जब हम अइलीं,
सपनइलीं दिन—रात ।
गिरल आचानक आसमान से,
पड़ल आस पर लात ॥
टूट गइल रे, सुन्दर सपना,
पढ़के हम बस पएलीं गम,
दिल के बात कहीं का हम ॥

(४)

मेहनत से हम आज पढ़वनी
के बस पइलीं काम ।
दुनियाँ खटसे रख देलस रे,
महटर हमरो नाम ॥
पड़ल हजारों घड़ा लाज के
पानी, रोवत बानी हम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

(५)

माहटर हवन जग-निर्माता,
आवे यही आवाज,
इनके बस में सब कुछ बाटे,
जीवन के सुख—साजि ॥
खूब पढ़ावस मन से लड़िका,
लेस न भुलियो के ई दम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

(६)

साढ़े दस से चार बजे तक,
समय बुझाला लाम ।
लड़िकन के रटवाना रटना,
बड़ुए ईहे काम ॥
हाँफ, पसीना सउदा हउए,
पइसा हउए केवल श्रम ॥
दिल के बात कहीं का हम ॥

(७)

खाली सत्तर कंसहुं मिले,
तीस दिवस के बाद ।
पहिली के लगभग मिल जाला,
दिल होला आजाद ॥
पर न टिके ऊ खुसी हायरे,
सत्तर भागे ला छम-छम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

www.bhojpurisahityangan.com

(८)

चार दिना के बाद हाय, रे,
होला खाली हाथ ।
बाप, मतारी लड़िका, जोरू,
ठोकेला सब माथ ॥
चाउर, निमक, दाल मसाला,
भइलन सबके दाम खतम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

(८)

परब अगर आवेला कोई,
सबके घरे हुलास ।
नाच उठेला सबके मनवा,
नाच उठेला आस ॥
नाच उठेला हमरो मनवा,
दुख के चिनगारी में जम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

(१०)

इहे जिनिगी बा जवना में,
बा खाली दुख-सोक ।
चिन्ता चूसत बीया खुनवा,
चूसेला जस जोंक ॥
भभक उठल बा दुख के अगिया,
जारत बा रे, हाय ! करम ।
दिल के बात कहीं का हम ॥

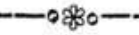

(१३ पन्ना क बाकी)

संतरी ओके समझा बुझा के दूर कइलस ।

ठीक आठ बजे दरोगा साहब क आदमी ओके खोजत-खोजत आयल औ जेलर क पुरजा देखा के ओके अन्दर लिया गयल । हथ कड़ी औ बेड़ी पड़ल एक कैदी से ओके भेंट करावल गयल । बड़ी दाढ़ी मूँछ और लम्बा-लम्बा बाल बढ़उले ऊ कैदी बड़ा डरावना मालूम होत रहल । एक बार रसवन्ती के ओर देख के कैदी सर झुँका देहलस । ओकरे आँख से टप्-टप् आँसू चूवे लगल । रसवन्ती भौचक्का हो के एक टक देखत-देखत एकाएक फूट के रो पड़ल औ कैदी के पैर पर गिर पड़ल । कैदी उठा के रसवन्ती के गले से लगा लेहलस । ओ बखत क हालत बयान के बाहर हौ । दूनों के आँख से गंगा जमुना बहत रहे । बाद में ओन्हें अलग होखे के पड़ल काहें से कि टइम हो गयल रहल । लेकिन रसवन्ती के भाग से ओकर मरद ओही दिन आपन तीन साल क कैद पूरा कर चुकल रहल, ये से ओके संझा होत होत छोड़ दिहल गयल ।

भोजपुरी खातिर

भोजपुरी में छापे खातिर लेख कागज का एक ओर साफ आ माथा बान्हल अछर में लिख के भेजीं । लेख लवटावल ना जाई । जवाब खातिर जवाबी पोसकाट लिखीं ।——संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

कुणाल

श्रीराम बचन लाल बी० ए०

(१)

जै गनेस की, एक दन्त की विघ्न हन्त की जै जै जै,
मातु भवानी कल्यानी महिमा अनन्त की जै जै जै।
ऊजर सारी हंस सवारी पोथी धारी की जै जै जै,
जोति जगावे, जगत जनावे, बीना झनकारी की जै।
जै संकर की, दीगम्बर की, डम्मर धारी की जै जै,
जै असुरारी अवध बिहारी, गिरिधर बनवारी की जै।
महा बिपति में रामचन्द्र के काज सँवारी की जै जै,
सुमिरत हरत भगत भय भारी,हनुमत बलधारी की जै।
जै हो काल-पुरुष मोहन की, चरखा धारी की जै जै,
अत्याचार-अनीति बिदारी हरिजन भयहारी की जै;
जै हिंसारी, क्रान्ति पुजारी सान्ति भिखारी की जै जै
जीव जन्तु सब एक निहारी प्रान बिसारी की जै जै।
बिनती करीला. कुल्हि देवी देवता क
जय छाड़ि के कपट अभिमान,
करीला बखनवाँ कुणाल मरदनवाँ क
जाने जे के दुनियाँ जहान।

(२)

रहे पाटली पुत्र जहाँ अबकी पटना बा राजधानी,
राजा रहँ असोक तहाँ बड़ धीर बीर रच्छक दानी,
सड़क पोखरा बाग बनाके देस के कइल सुख खानी
देस-देस में उड़ल पताका दया धरम क सनमानी,
सगरों बनवलँ दवाखाना पुनि खाना
जेकर करे इतिहसवा बखान।
उनहीं क लाल ऊ कुणाल मरदाना
जे के जानऽ तानऽ दुनियाँ जहान॥

(३)

राज महल में होरिला जामे, बाजे घर-घर में थारी,
नन्द भवन अइलन बनवारी खुसी मनवलन नर नारी
किछु दिन सोभल गोद ललनवाँ पालनवाँ क असवारी
हुरल बकँइयाँ किछु दिन फिर ऊ नाचल देदेके तारी

www.bhojpurisahityangan.com

देखि के ललन लोग हो गइलन मगन सब कुसल मनावँ भगवान.
दिन दिन बढ़े जइसे दुइजि क चान जेके जाने लागल, दुनियाँ जहान।

(४)

छुटल झुनझुना, आइल किछु दिन-गुल्ली डंडा क बारी
लगलाँ झुलावे किछु दिन में मुंगरा व गदा भारी-भारी
भाला-बरछी-तीर-कटारी-घोड़ सवारी अधिकारी,
पढ़ि लिहलन थोरे दिन में पोथी-गरन्थ दुनियाँ दारी।
देखते देखते ऊ ललन बलवान भइलन, होइ गइलन सुघर सुजान।
देखि के सुरति मोहे मदन मुरितया कि जवना के होखे न बखान॥

(५)

देस-देस में चरचा छिड़ल रूप वो गुन क अधिकाई,
भागि सरहली कंचन माला पवली संगी सुखदायी,
धन-संपति ईज्जति राजा क बढ़ि जग में गइली छाई,
दबि गइलन परताप से इनका राज क सगरों बलवाई,
नरम सुभाव मनभावे इनहीं में बसे राजा जी क हरो-घरी प्रान।
रूप-रस पीके हरिया ले जवन उहे रहे रानी जी क मनक बगान।

(६)

बिजय कलिंग देस पर पाके राज सभा बड़ हरखाइल,
उतसव में नाटक खेले के बाति ई सबका मन भाइल;
राजकुमारन के भी ओहमें हिलिमिलि के पाठ दियाइल,
उत्सव में हर नर-नारी बनिठनि देखे खातिर आइल,
कुँअर कुणाल धइ मदन मोहन भेस पनिया के कइलँ सम्हारि।
दरसक खुब खुस भइलन राजा रानी दिहलन सुघर सुघर उपहार।

(७)

केहू कहे, आँखि अनरथ क भवनवाँ,
केहू कहे अँखिये से सगरो जहनवाँ,
बिरिथे कँवल. मीन, मिरिग खँजनवाँ
अँखिया बरीसे अमिरित क सवनवाँ;
अजब अजब रंग जगवा क लउकेला अँखिये क कुल्हि खेलवार।
आइ हियरा में हर मुरति बिराजेले अँखिये क खोलि के दुआरि॥

(८)

भाई बाप हो कि बेटा हो मन मोहन निरखे नारी,
मन सम्हार में राखि सकेना बढ़ि जाले लाचारी

www.bhojpurisahityangan.com

नारी के मद से बचलन ऊ जिन्हे बचवलन मदनारी;
नारी रतन–धन–खानि जगत में कवो जहर होले भारी
रूप भवं कुपवा में दीया क अंजोर जेमें पढ़े प्रेम पतिया॰ जहान।
तनि को लवरिया से जरि के खंगार होला मन क भवनआलीसान।

(९)

महाराज के राज भवन में एक नई रानी रहली,
तीस रच्छिता नाँव रहे ऊ रूप वो गुन खानी रहली,
प्यार दुलार महाराजा क उनके मिलल अथोर रहे,
औ उनुका अधिकार क चरचा फइलल चारू ओर रहे,
कुँअर कुणाल कऽ ऊ मयभा रहलि जेकर सुरुम बा भइल बखान।
खोवा कूटि ढहली बिपतिया कि जवना क होला नाहीं हालिए बिहान॥

(१०)

तीस रच्छिता रानी क मन में बसल मदन मोहन मूरति,
बान फूल क चला के रति पति कइ देहलसि उनकर दुरगति,
चलल रूप जादू जब उन पर मारि गइल उनकर सुमति
बेकल मन चंचल रानी पानी बिनु मछरी अस तलफति
कइले सिंगार मिले यार से डगरिया धइले रानी चलि भइली बगानि।
मोहनी मुरतिया से जियरा जुड़ावे लागि छोड़ि-छाड़ि धरम धियान॥

भोजपुरी के भूखि

टोला फकरू राय जिला बलिया के नवभारत पुस्तकालय के मंत्री जी लिखत बानी :—

जयराम जी की

हमार पुस्तकालय रउआ भोजपुरी पत्रिका के गाँहक ह। भोजपुरी के चार-पाँच गो अंक त हमरा पुस्तकालय के बड़ा ठेकाने से पहुँच गइल लेकिन, ओकरा बाद एको अंक ना मिलल। हम जननीं कि साइत भोजपुरी पर कवनो आफत आ गइल होई। आज काल भोजपुरी के बिसेसांक के चर्चा सुने में आइल हा आ इहो पता चलल कि बिसेसांक का बाद एकठो अंक निकलल बा। पता ना जे डाक का गड़बड़ी से नइखे मिलत कि कार्यालय के। रउआ से निहोरा इहे बा कि तनी पता लीं आउर हमरा कीहाँ भोजपुरी पहुँचा दीं। देहात का पुस्तकालय में भोजपुरी के बड़ा भूखि रहेला। कृपा करीं।

"भोजपुरी ना हमरा नाँवे, आई गइल बा गाँवे-गाँवे"
एह पर बबुआ करऽ बिचार नात फेनु होखब अलचार
दीयरा में बा मोर मकान, तूँ हमरा के जनल अनजान
अइब इहँवा एको बेर, अरूप खिया लजबाइब ढेर।
बाति देखब जब ढेर बेमेल, कींच पाँक में देब ढकेल।
ईची एह पर कर बिचार, भोजपुरी तू भेजऽ इआर।"

www.bhojpurisahityangan.com

हे संपादक जी सुनऽ
हमनी के ई पुकार।
भोजपुरिया के भेजि के,
कइद तुरत गोहार।

एकर जवाब जाता

दोआरा के अदमी सब चोर, लेलन गाय भँइस के छोर
नाव चढ़ा नाता के ठेल, 'रहीं आज' धरी चदर लेल
नाव गइल गंगा का बीचे, गइल चदर नाता का खींचे
भोजपुरी हऽ एक किताब, पाकिट में भी लीहें दाब
मरदमेहारू सबकेनायक, निकलत बा जब जनसुखदायक
जन में नेह बढ़ल ही जाता, जनता से बा लागल नाता
जेकरा जब ई जहाँ भेंटाइ, हाथ मारि के लीही छिपाई
तब हमार कवन बा दोसा, छोड़ीं रउआ आपन रोसा
भोजपुरी ह सभ के भासा, सभका लागल एह पर आसा
घर-घर ई जाये के चाहीं, टोला से बा नफरत नाहीं

चोरिओ से केहू ले जाई, ओकरो से बा बहुत भलाई
पढ़के देख निमन जब पाई, ओकरो मनमें लालचआइ
ऊहो भेजी आपन चंदा, ओकरो घर भर करी अनन्दा
अपने येह पर करीं बिचार, हमके कइसे करब अलचार
कींचपाँकसे हमना डेराइब, अरूस छोड़िके सतुआखाइब
हमहूँ हईं भोजपुर के बासी, बानी जन-जन के बिस्वासी
हमरा पर जे आफत आई, भोजपुरी ली हमें बचाई
हम त भेजलीं जाँच कराई, पहुँचल ना कइलन फेरहाई

मंत्री जी हम से सुनीं,
बात कहब छिन गाय।
जगजीवन का राज में,
डाँक गइल गबड़ाय।
सियाबर रामचन्द्र की जय!

—संपादक

भोजपुरी भाई लोगनी

खाली ५) भेज के अपना गाँव का भासा में कथा कहानी गीत मानर आरे से निकले वाला मासिक भोजपुरी में पढ़ीं।

भोजपुरी चार करोड़ लठधर जनता के भासा ह। एकरा में लाठी आ कलम दूनो के जोर बा।

पुराना जबाना से आज ले एकरा में बड़-बड़ पण्डित, ज्ञानी, बीर आ चलबिधर लोग होत आइल बा।

जहाँ भोजपुरी बीर समुझल जाले ऊहाँ बुरबक भी, एकरा के हटावे के एके उपाय बा कि सभ किताब भोजपुरी में छापल जाव कि जेकरा अछर चिन्हे आवे से पढ़ के समुझ जाए।

भोजपुरी का राजभासा, प्रांत भासा भा इलाकाई भासा बने के सबख नहखे बाकी चार करोड़ नरनारी के ई मातृ-भासा ह एह से लोकभासा कहीं भा जन भासा ई बन के रहीं एकरा बिना बड़ा हरज बा।

अगर सभ के पढ़ुआ बना देवे के राय भीतर से होखे त गँवई क भासा में किताब लिख के, छपा के घरे-घरे पहुँचा दीं, सभे पढ़ जाई। एह से अछरो चिन्हाए लागी—अछर ज्ञान होई।

इसाई लोग अपना धरम के परचार खातिर १६१३ ई० में 'प्रभु इशू मशीह के सुभ समाचार' कैथी अच्छर आ भोजपुरी भासामें छपवले रहे ओकरा के १६४६ में नागरी अच्छर आ भोजपुरी भासा में छपा के सगरी मेला-बाजार में बेंचत बा। हमहन का भी आपन बात आंही में छपाईं त लोग झट दे बुझ जाई।

भोजपुरी में सब बात समुझ में आजाई त हिन्दी संसकीरित, अंगेजी बंगला पकड़त देरी ना लागी। एगो अइला पर सभ आवे लागेला।

मातृभासा रोज-रोज का बेवहार खातिर जरूरी

www.bhojpurisahityangan.com

बा। घर में जवन बात हम अपना में बतिआवत बानी ऊहे अपना लोग के लिखब काहे ना? मंच पर बइठ के सभ लोग अपना भासा में बतिआवेला आ जब लेकचर देवे खड़ा होला त एकदम बदल जाला अइसन काहे?

धन, जन, स्वाधीनता चल जाय त जाय ऊ फेरू आ जाई बाकी धरम आ भासा चल जाई त ऊ फेरू ना लवट सके। समूचे देस के मरद-मेहरारू के खड़ी बोली के हिन्दी सीखा के बोल चाल से लेके घर के कुल्ह काम करे लायक बनावल मसकिल बा। एह से भोजपुरी-हिन्दी में पढ़ाई होना जरूरी बा कि ऊपर जाके आदमी अंगेजी, फारसी सभ सीख ले।

सउँसे हिन्दुस्तान में फैलल बंगाली लोग एगो साहित्त सम्मेलन जयपुर में कइले रहल हा। ओह में जतना लोग आइल रहन सभ के मेवाड़ के महाराज भोज देलन आ अपना राजभर के देखनउग जगहन के अपना दाम से देखवलन हा। का हमनी का भोजपुरी में सम्मेलन करे के बल नइखे? एकर बोजह का बा, सोचीं आ समझीं।

संगठन के अभाव बा। जहाँ हथुआ, बेतिआ, डुमराँव, तमकुही, रामनगर वोगैरह राज बाड़न स, जहाँ बिड़ला, डालमिया आ कइना धनीमानी लोग के कारबार बा, ओकर ई हालत काहे? संगठन नइखे। डिहरी में डालमिया नगर बन सकेला त उनका इहाँ के जन भासा पर भी ध्यान देवही के पड़ी। समूचे कारखाना भोजपुरी लोग से ही आबाद बा।

सोलह महीना भोजपुरी पत्रिका चलवला पर एकर जरूरत बुझाय लागल। एकरा के बड़-बड़ पंडित लोग आ नामी-गरामी एकबार पसंद करत बा। सभ से खुसी के बात ई बा कि मेहरारू लोग भी एकरा के पसंद करत बा।

एह से भोजपुरी भाई लोग से हमनी के अरज बा कि अगर अपने सभे एकरा के चलावे के चाहत बानी त एकर गाँहक अपने बन जाईं आ तब कम से कम ५ गाँहक बना दीं। अगर भोजपुरी के २५००० गाँहक ना भइलन त भोजपुरी लोग के मरदानगी आ लाठी दूनों पर आफने बा।

एकर आपन प्रेस आ प्रकासन होना बहुत जरूरी बा। बिहार सरकार भोजपुरी के मातृ भासा भी माने के तइआर नइखे। ऊ हिन्दी, उर्दू, बंगला, ओड़िया, मैथिली सब में पढ़ाई बाकी भोजपुरी में ना। एकर जवाब हमनी का देवे के होई। अगर मातृ भासा में सिच्छा होई त भोजपुर के मातृ भासा भोजपुरी माने के पड़ी।

एह से भोजपुरी के सलाना चंदा ५) अपने भेजीं, अपना हित-दोस्त से भेजवाईं।

नमूना के कापी मुफुत मत माँगी।

एकरा के खरच से बचावे खातिर जवाबी पोस-काट लिखीं।

भोजपुरी चाहे जइसन निकलत होखे एकरा के आपन समुझ ५) भेजीं। अवही नया कारबार बा। भासा भी नया, लिखनीहार भी नया। एकरा के बनावे के बा। बनावें में मदत करीं। कतना पइसा जिआन हो जाला, इ पाँच रुआ भासा के खड़ा करे में लागी। एकरा के पढ़ के सभ समुझ जाता एह से बढ़ के फायदा का हो सकेला?

भोजपुरी ना मिलत होखे तबो पाँच भेजीं केहू राह में चोरा के पढ़ते नु होई?

रामायण प्रसाद, सभापति ब्रजकिशोर बहादुर उप-सभापति अब्दुल क्यूम अनसारी उप-सभापति
(डाक्टर) पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली (डाक्टर) धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी अलगु राय शास्त्री, मनोरंजन प्रसाद सिंह
महेन्द्र शास्त्री (डाक्टर) उदयनारायण तिवारी (डाक्टर) रामविचार पाण्डेय

www.bhojpurisahityangan.com

॥ छठ के गीत ॥

श्रीमती बृज कुमारी सिन्हा, पिरौंटा

कातिक सुदी खष्टी के साँझ आ सत्तमी क सवेरे सूरूज बाबा के अरघ (अर्घ्य) दिआला आ एकरा के छठ बरत कहल जाला। ई छठ बिहार आ ऊत्तर प्रदेस के पूर्वी जिलन में खूब ठाट-बाट से कइल जाला। ई पता नइखे कि देस का अवरु भाग में एकर का हाल बा। ई बरत अउरी जगे होला कि ना, इहो पता नइखे।

पुरान जबाना का इतिहास में त ई बात जरूर लिखल बा कि आर्य लोग सूरज, अगिन वोगैरह देवता के पूजा करत रहन। हो सकेला कि ओही में इनकर भी गिनती होखे। बाकी एक सवाल एकरा साथे ई भी उठत बा कि जहवाँ सूर्य भगवान के पूजा होत बा उहाँ अनेक बार छठी माता भा माई सबद काहे आवत बा। वेद पुरान के जाने वाला पण्डित लोग का एह पर धेआन देके एकर खोज पूछ करे के चाहत रहे।

हमरा भोजपुर इलाका का जन-जीवन में बहुत बड़ा महातम वाला ई परब ह। एकरा के जादे मेहरारूये लोग करेला बाकी-मरद लोग भी जब-तब भूख जालन आ अरघ देलन। एह में सफाई आ सुधता के बड़ा खिआल रखेला लोग। छठ जब करे के बेरा आइ त चार-पाँच; कतो-कतो आठ-दस दिन पहिले से भी गीत के झंझकार सुनाये लागी। समूचे घर के सफाई होई आ पूजा खातिर घर के बासन बरतन सभ अलग क दिआई। आँकरा के अलगे धो-माँज के धराई। परसादी के जतना भी चीझ आई ऊ अँगउँग कहाई। आँकर हर क्रिया एकदम पवित्रता का साथ होइ। पूड़ी, ठेकुआ, वोगैरह भी बनेला जवना के गहुँम धोवे, सुखावे, पीसे, साने आ पकावे में पूरा हिफाजत होला। घर के बड़-बूढ़, आजी-दादी लोग एह घरी आपन लकुठी लेले लइकन आ चिरइन से रखवारी करे में, जेमें केहू छू ना दे, मेगजीन का पहरा से भी जादे सजग रहेला।

पिसान पिसात रहेला आ गीत गवात रहे ला ओह गीत में कतना रस रहेला, कतना लहर लहरात रहेला कि का कहल जाव। लोक गीतन में सब से जादे एही में सुर भरल बा का दो? नवहीन का कोमल कंठ से:—

'सुगवा जे मरलोधनुक से सुगा गिरे अरराय ॥

सुनके सचहुँ मन मोह जाला आ एगो एजबे खिआल बन जाला जवना में खाली पवित्र भावना भरल रहेला जवान से जवान आदमी का भी दिल में कवनों बे बिचार के बात ना उठे। एह गीतन के भोजपुर के सभ लोग हर साल कातिक महीना में सुनेला बाकी ई भोजपुरी के धरोहर ह एह से एकरा के इहाँ देल जात बा बाचक लोग में जरुर ई रस के सिरिजना करी:—

संपादक—

काँचे ही बाँस के बहँगिया, बहँगी लचकत जाए।
बाट जे पुछेला बटोहिया, ई सभ केकरा के जाय।
आन्हर हवे रे बटोहिया, ई त आदित देव के जाय।
ई त सूरूज देव के जाए।
होखीं ना महादेव कँहरिया, बहँगी घाटे पहुँचाव

(२)

केरवा जे फरेला घवध से, ओह पर सुगा मेड़राय,
हमरा आदित के अरगिया, सुगा देले जुठीआए

www.bhojpurisahityangan.com

मरबो रे सुगवा धेनुक से, सुगा गिरले मुरुछाए
सुगिया जे रोवेले बियोग से, सुगा गिरले मुरुछाए ।

(३)

पेन्हना महादेव पियरिया, चल अरग दिआय ।
ना देखों ताल ना पोखरा , काहाँ अरग दिआय ।
कहँवा आदित देव उगीहे, जहाँ अरग दिआय ।
चारही कोन के पोखरवा, चहुँघटल चारो घाट ।
उहंवे सुरूज बाबा उगी हें, चल अरग दिआय ।
पहिरू गउरा देई चुनरिया, पूजे मन के रे आस ।

(४)

ए कवन लाल चन्दवा गये तानेले घटिया धूरे
बाँन्हेले ऐ ।
ए कवन देई छठी बरत कइली उगे आदित
परसन्द ए ।

(५)

ए कोपि-कोपि बोलेले सुरूज देव, सुन हो महादेव हे ।
मोरे घाट दुविया जनमी गइले मकरी बसेर लेले हे ।
हँसी-हँसी बोलेले महादेव सुन हे सुरूज देव हे ।
रउरा घाटे दुविया छिलाई देबो मकरी उरासी देबो
चनन पहोरी देबो हे ।

(६)

हम तोहे पुछिला आदित दुलरुआ काहा रउआ बास
लिला हे ।
बसे के त बसीला महादेव के अगना गन्ध धूप
गम के लागे तहँवा ।
पिअर धोती पेन्हन लागे तहँवा ।
सोरही गाय के दूध अरग लागे तहँवा ।
साँझ भइले घरवा जाये दी आदित बाबा,
बलकवा घरे रोवे दूध बिना ।

(७)

दरसन दीही ना आपन हे छठी माई ।
सगरही रात हम जल थल सेइला,
सेइला सरन तोहार ऐ छठी माई ।
अपना के माँगिला अवध सिन्होरवा,
जनम-जनम एहवात ऐ छठी माई ।
सभवा बइठन के पुरुख माँगिला,
दरसन दीही ना अपान ए छठी माई ।
घोड़वा चढ़न के बेटा माँगिला,
पढ़ल पंडितवा दमाद ए छठी माई ।

(८)

नदिया के तीरे तीरे बोअलो मैं राई,
राम जी के मृगा चरीए-चरीए जाई
ए छठी माई ।
मारेले मृगा गिरेले मुरछाई,
आवेले कवन देई के भाई ए छठी माई ।
सोने केरा धेनुका रूपही केर बातीं,
मारेले कवन भैया धेनुका चढ़ाई
ए छठी माई ।

(९)

गरजि-गरजि देव बरिसले ओरियन मधु चुवे हे,
भींजेला महादेव के धोतिया, गउरा देई के अभरन हे,
कोरवा पइसल भींजेले गनपति पूता अउरी सहोदरा
बेटी हे ।

(१०)

सोने खड़ऊँआ ए दीनानाथ, हाथे बट कोन ।
चली जे भइल ए दीनानाथ, शहर बाजार ।
गोबर काढ़े गइलो ए बाँझी गइया के बथान।
बरजड़ ससुरवा ए दीनानाथ लेले लुलुआए ।
दूर जाहू दूर ए बाँझो, मोर गइया होइहें बाँझ ।
तोहरे परछहियाँ ए बाँझो, मोर गइया होइहें बाँझ ।
सब के डलियवा ए दीनानाथ, लेल, होरिआय ।
बाँझी के डलियावा ए दीनानाथ, ठहरे तवाँये ।
सासु मोर हुदुकाए दीनानाथ, ननद गरिआए ।
गोतिनी बैरिनिया ए दीनानाथ,
बँझिनिया धइलस नाँव ।
सेज के पुरुखवा ए दीनानाथ, रोकेले दुआर ।
चुप होखू चुप ए बाँझो, पटोरवे पोछ लोर ।
तोहरा के देबो ए बाँझो, चलली घर के ओर ।
बाँझ छोड़वल ए दीनानाथ, मराछी जनि कइए ।

www.bhojpuricommunity.com

धरती के भीतर का बा

श्री कमलाकान्त त्रिपाठी,

एह धरती, जवना के ऊपर हमनीका रहतानी ओकरा भीतर-बाहर सब कुछ जाने खातिर बहुत पुराना जैबाना से लोग कोरसिस करत चलि आवता लेकिन पहिले ज्ञान ओतना आगे ना बढ़ि सकल रहे काँहे से कि ओइसन हथियार आ कल-पुरूजा हमनीका पासे ना रहे जवना से भीतर के बारे में पता लागि सके। पृथ्वी के भीतर हमनी का ढ़ेर दूर नीचे तक त नइखीं जा सकत, जादे से जादे कुल्हि ३—४ माइल तक सोना—चानी के खान में नीचे लोग पहुँच सकत बाड़न। एहि से हमनीका सब भीतर वाला चीज के बारे में आँखे देखि के त नइखीं जान सकत। तब त कवनो दोसरे उपाय आ जुगुति लगावे के पड़ी। हमनी के कुछ अइसन परमान खोजे के पड़ी जवना से हम धरती के भीतर के बारे में जानि सकीं।

पृथ्वी के ऊपर ढ़ेर हिस्सा परतदार चट्टान से बनल बा, अउर बाकी में ग्रेनाइट पत्थल पावल जाला। ई सब के नीचे बुन्दादार पत्थल मिलेला। ई बुन्दादार पत्थल आउर पत्थल के घनत्व ३ से लेके २½ तक बा। लेकिन सँउसे धरती के घनत्व ५·५२ ह। एहि से हमनीका ई साफ पता चलि जाता कि धरती के भीतर वाला भाग पानी बुन्दादार पत्थल के नीचे वाला हिस्सा के घनत्व ७ से लेके ८ तक बा। पानी के घनत्व १ मानल गइल बा। घनत्व बेसी भइला के मतलब बा कि भितरा कवनो बहुत भारी चीज बा।

जइसे-जइसे हमनीका धरती के नीचे भीतर के ओर जाइलां जा ओइसे-ओइसे गर्मी बढ़त जाला। करीब हर १०० से १०५ फीट नीचे गइला पर एक डिग्री सेन्टीग्रेड गर्मी बढ़ि जाला। एकर अनुमान नीचे खाद में उतरला से लागेला। १०० डिग्री सेन्टीग्रेड पर पानी खउले लागेला। एहू से हमनीका अनुमान लगाले सकीला जे पृथ्वी के बीचो-बीच यानी केन्द्र तक पहुँचत-पहुँचत जवन करीब ४,००० माइल नीचे बा, सभे कुछ पिघलले होई।

ज्वालामुखी विस्फोट जब होला त पिघलल चीज बाहर निकलेला जवना के लावा कहल जाला। एकरा के देखि के कुछ विद्वान लोग के ई धारणा भ गइल कि पृथ्वी के बहुत हिस्सा नीचे में जरूर पिघलल बा। लेकिन ज्वाला मुखी से जे निकलेला ऊ त नियरे से आवेला आ ओकर स्थानीय कारण बा जवना के बारे में कबहुँ दोसरा बेरि बिचार करे क।

जब ऊपर से आंगारि नियन चमकत गिरेला जवना के हमनीका 'तारा टूटल' कहीला त ओकरा के देखि के कबहुँ-कबहुँ हमनी का घबड़ा जाइला आ कबो—कबो ओकरा बारे में जाने के कोसिस करीला कि ई का ह, कहाँ से गिरेला, काँहे चमकेला आ काहे एकदम सोनहुला पाउडर नियन लागेला। त कइसे एकर जनम भइल ई हमनीका दोसरा बेरि जब पृथ्वी के जनम के बारे में बिचार करेके तब ओहि संगे बिचार कर लेबे के। लेकिन एहि घरी अतने कहि दिहला से काम चलि जाइ कि जब सुरूज में से पृथ्वी अउर सब ग्रहन जैसे मरकरी, बुध, मंगल, शुक्र शनि, इयूरेनस, नेप्चुन अउर प्लूटो के संगे निकलि के अलग भइल त ओहि सूर्य के कुछ

www.bhojpurisahityangan.com

हिस्सा आकास में बहुत दूर फेंका गइल आ तबहीये ले ऊ एह अनन्त आकास में खूब तेजी से घूमता। जब कभी भुलाइ-भटकि के एकबएक ऊ हमनी के धरती के वायुमंडल (जवन पृथ्वी के चारो ओर १९८ माइल तक घेरले बा)। के अन्दर आ जाला त धरती ओकरा के अपना ओर खींचि लेला। ओही से ऊ पृथ्वी में आ के टकरा जाला। बहुत बेर त खूब तेज चले के कारन ओकरा में आगि लाग जाला आ ऊ जरि के नीचे गिरेला जवन सोनहुला भुरुकुनी (यानी पाउडर) नीयन लागेला। लेकिन जवन एकदम जरि के राख ना होखे तवन ढोको के ढोका गिरेला। हमनी के देस में जवन गिरल बा तवन कूल्हिये बटोर—सटोर के कलकत्ता के अजायबघर में रखल बा।

इ ढोकवा नियनका चिजुइया के हमनीका तीन भाग में बाँटि सकिला जा। पहिलका जवना के एइरोलाइट्स (Aerolites) कहीं ला जा ऊ खाली पत्थल ह। अउर दोसरका के नाँव 'साइडेरो लाइट्स धइल बा, एकरा में पत्थल आउर लोहा दूनो मिलल बा। तिसरका साइडेराइट्स (Side·i·es) कहाला आ ई नीछन लोहा अउर नीकेल के मिलला से बनल बा आ बहुत भारी होला। ई तीनों तरह के चीजन के देखि के हमनीका अनुमान लागाइला कि धरती के भीतर अइसने चीज होई काँहि से कि धरती के भी जनम ओकरा संगे भइल रहे।

हमनी के ई अनुमान अउरी बरियार हो जाला जब पृथ्वी के एगो बड़का चुम्बक नीयन बर्ताव करत देखला जा काँहि से कि लोहा अउरी नीकेल खूब चुम्बक वाला चीज ह। एहि से हमनीका बूझिला जा कि पृथ्वी के केन्द्र के चारो ओर लोहा अउरी नीकेल कुछ दूर में बा।

जब धरती डोलेला यानि जब भूडोल होखेला तब धरती के भीतर तीन किसिम (खल) के धारा चलेला, जवना के 'पहिलकी धारा' प्राइमरी वेब्स (Primary waves) या पी० वेब्स (P. waves); 'दोसरकी धारा' (सेकेण्डरी वेब्स या 'S' waves) आउर लमहरकी धारा लौंगीटुडिनल वेब्स (Longitudinal waves या 'L' waves) कहल जाला। पहिलकी धारा आगा-पीछे (—» «—)चलेला आ ओकरा से घर मकान के बहुत कम नुकसानी पहुँचेला। ई धारा जब कवनो पिघिलल चीज होके बहेला त एकर चाल तनि कम हो जाला। दूसरकी धारा ऊपर-नीचे (↕)चलेला आ सब कमजोर घर-मकान के भसा देला, लेकिन ई धारा पानी चाहे कवनो पिघिलल चीज से ना जाला। बीचे में खतम हो जाला। एह दूनो धारा के भो कइगो किसिम होखेला जवन खास-खास- घनत्व के पत्थल के बीच से होके चलेला। लमहरकी धारा त धरती के ऊपरे चलेला। ई कुल धारन के नापे खातिर एगो हथियार बा जवना के सेसमोग्राफ कहल जाला, हमनी कीहाँ ऊ पूना में बा।

जब-जब भूडोल खूब जोर-जोर से भइल बा तब-तब धरती पर एगो अइसन भाग बाँचि गइल बा जवना पर भूकम्प के इचिको कवनो असर नइखे पड़ल। ओइसन हिस्सा के भूडोल के परिछाहीं वाला हिस्सा के धारा के असर ओइजा पहुँचबे ना करे। एही से हमनो के ई विश्वास खूब ठीक से हो गइल बा कि पृथ्वी दोसरकी धारा खतम हो जाला।

धरती के उपर से लेके बीचा बीच (केन्द्र) तक ३९६० माइल यानी ४,००० माइल बा। ऊपरी सतह से लेके १० माइल तक ग्रेनाइट पत्थल Granite rock) मिलेला, लेकिन कहीं-कहीं परतदार पत्थल (Stratified rocks) भी मिलेला जवन पहाड़न के नीचे अउरी ढ़ेर दूर ले चलि गइल बा। ओकरा

(बाकी ३० पन्ना प)

www.bhojpurisahityangan.com

पूरूब के गढ़ जमशेदपुर

रघुवंश नारायण सिंह

बिहार हिन्दी-साहित्त सम्मेलन के २४ वाँ अधिवशन अगर जमशेदपुर में ना होइत त टाटा के ई नगर देखे के मोका हमरा एह जिंनगि में त नाहिये मिलित। अइसे त आज से ३२ बरिस पहिले १९२१ साल में जब हम लइका रहीं त एक बेर गइल रहीं आ टाटा नगर खूब देखले रहीं। बाकी ओह देखला में आ एह में पूरा फरक हो गइल बा। अब अतना दिन का बाद इआद नइखे कि ओह बेरा हम कवना जगह टिकल रहीं आ ऊ कवन आदमी रहे जे हमरा के ओह उमिर में जब, हमरा में कुछुओ ना रहे, तब अपना घर में टिकवले रहे। ऊ आदमी बिहार भा भोजपुर इलको के ना रहे, साइत ऊ मध्य प्रदेस के रहे। अपना इयाद पर बहुत जोर देला पर हमरा बुझात बा कि हमरे उमिर के एगो उन को लरिका रहे, जवन रेल भा राह में हमरा भेंटा गइल आ ओही जे से हमरा के अपना घरे ले गइल। हम सात आठ दिन ओहीजा प्रेम पूर्वक रहलीं। उनकर बाप-मतारी सभे हमारा के बाड़ा दुलार से राखल आ कारखाना वोगैरह देखला देल।

सन् १९२० ई० में असहयोग के नागाड़ा बाजल आ २१ में धुँआधार भइल त हमहुँ स्कूल छोड़ देलीं। देस में आग जइसन लाग गइल आ तरह-तरह के लोग देस के उधार में लाग गइलन। ओही में छपरा के रामखेलावन मिस्त्री भी उग अइलन आ एगो कारखाना का साथे स्कूल खोल के गांधी जी ले थोरही कम मसहूर हो गइलन। कारखाना में उनका पास एगो अइसन मसिन रहे जवना में खूब पातर पतर डाल के दबा दिआए त एगो नीब निकल आवे। ओही मसिन पर अतना हँगामा भइल रहे कि अब इआद अइला पर हँसी आवत बा। पतर पीट के ओतना महीन बना के ओह में डालल जाय आ एक बेरा एगो नीब निकले त ओह से का होइत, बाकी जबाना के खूबी रहे। उनकर चरखा भी बनत रहे आ ऊ बाजार में आइल आ बिकाइल भी।

एह से गांधी जी का पहिलका आन्ही में उनको खूब प्रचार भइल आ उनकर स्कूल चल निकलल इहाँ तक कि पंजाब, मध्य प्रदेश, गुजरात तक के विद्यार्थी जे स्कूल-कालेज छोड़ले रहे से इहाँ आके दाखिल हो गइल। बाकी ई तीन महीना में ही बुझा गइल कि एह तीसी तेल नइखे एह से कुछ लइकन के राय भइल कि अगर टाटा का टेकनिकल स्कूल में हमनी भर्ती हो जाईं त अच्छा होई। एकरे जाँच करे हम टाटा गइलीं कि हमहन का भर्ती हो सकीले कि ना।

पर साल झरिया में जब ई तय भइल कि अगिला साल टाटा में सम्मेलन होई त मन में ई भाव जरूर उगल कि टाटा देखे के मिली। एने भोजपुरी के झंझट से बहुत संसय हो गइल रहे बाकी सभापति जी से बात भइल त कुछ मन डोल गइल आ साँवस ना रहत भी हम चल गइलीं। अइसन हालत में गइलीं कि हम ना चाहत रहीं कि राह में केहू जान-पहचान के हमरा भेंटाव। डाक्टर उदय नारायण तिवारी जी आ सभापति जी पटना टीसन पर हमरा लउकलीं बाकी हम कन्नी काट के पाछा का एगो डाबा में घूस गइलीं। ओह डब्बा में हम त अकेले ढूकलीं बाकी ओहीजे 'बिकट जी, 'तोमर जी','जीवन जी' वोगैरह लोग डेरा डलले रहे। एह सब आदमी से अतना भीड़ हो गइल कि रात भर कविता के

www.bhojpurisahityangan.com

लहर पर ढहत ढिमिलात हमनी का चल गइलीं। सवेरे गोमो में सब से भेंट भइल। मुँह हाँथ धोवला पर चाह-टोस्ट भी मिल गइल। भाई! सम्मेलन के सभापति होखे त देवव्रत जी नियर। बुझाय कि उनका बेटा के बरिआत जात होखे। के काहाँ बा, केकरा के नास्ता मिलल, केकरा के ना मिलल, के खाइल, के ना खाइल। राह भर भला आदमी गाड़ी का एह छोर से ओह छोर ले हड़होर मचा के छोड़ दे।

राह में डाक्टर उदय नारायण तिवारी, महराज कुमार दुर्गा शंकर सिंह आ पं० रामदयाल पाण्डेय से भोजपुरी का बारे में खूब बात-चीत भइल। ओही गाड़ी से बिहार एसोसियसन के सभापति श्री बलदेव सहाय भी बिहार के प्रचार में छोटानागपुर के जात्रा में जात रहन। एक बेरा उनका गाड़ी में कुछ लोग के बोलाहट रहे, डाक्टर उदय नारायण तिवारी जी का साथे हमहुँ घूस गइलीं। तिवारी जी के परिचय पवते बलदेव बाबू भोजपुरी के बिरोध करे लगले। तिवारी जी उनका जवाब खातिर काफी रहन। बाकी एनहुँ मन उबिआत रहे कि कह दीहीं कि सेकेण्ड किलास में चले वाला तीसरा दरजा के मजा का जानी। कभी ऊहाँ का हिन्दी के बिरोधी रहीं अब भोजपुरी के बिरोधी बानी। ओह डब्बा के हवा-पानी बड़प्पन का भार से अतना गऊँजाइल रहे कि दम घुंटे के ठेकाना रहे, बस हम भाग गइलीं।

कबहीं-कबहीं जब हमनी के आँख गाड़ी से बाहर चल जाय त ऊहाँ के प्रकृति के सोभा लउके लागे। पहाड़पुर से गोमो ले त रात रहे बाकी फजिर भइला से पारसनाथ के पहाड़ लउके लागल रहे। जब गोमो से गाड़ी चलल त घनघोर जंगल आ पहाड़ चारो ओर, बीच में खेत के लहरात धान आ जहाँ-तहाँ छोट-छोट घर के छोट-छोट गाँव। चलत-चलत थाक गइल रहे आदमी आ बुझात रहे कि आपना देस से बहुत दूर चल आइल बानी जा। छोटानागपुर के ऊ पठार सचहुँ आन देस नियर बा आ एही से एक भाई का मुँह से निकल गइल कि झाड़खंड के एगो राज बना देवे के चाहीं।

खैर, हमनी के गाड़ी तीन बजे दिन में टाटा पहुँचल आ पत्थल का स्कूल में हमनी का टिकीवल गइलीं जा। नहा-धो के जल घेराव भइल आ पंडाल में स्वागताध्यक्ष आ सभापति के भासन सुनल गइल। दोसरा दिन सवेरे अपना में कुछ रकझक भइल आ कुल्ह प्रस्ताव पास होगइलन स। बिजुकल लोग झट दे मान के सुलहा क लेले आ हमहन का हाथ उठाके प्रस्ताव पास क देलीं।

सम्मेलन में गइला के फल हमरा मिलल। बलिया के हवे आचार्य बैजनाथ राय, जे सिंह भूमि जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री बाड़े। ऊ तिवारीजी के साथे भदन्त आनन्द कौसल्यायन, प्रिंसिपल माधव जी, श्री ब्रजनन्दन आजाद, महराज कुमार दुर्गाशंकर सिंह के टहरवले एगो चाय घर में ले गइले। हमनी ओहीजे काफी पिअलीं आ भोजपुरी पर खुल के चर्चा हो गइल। फेनु ऊहाँ से सम्मेलन के मैदान में टहरत भी बात चलते रहल। भाई दुर्गा-शंकर सिंह लिंग का फेर में रहस, माधव जी के तत्सम सब्दन के मोह वोगैरह प एगो साफ राय मिलल। एह में कौसल्यायन जी के राय एकदम ठेठ भोजपुरी का ओर रहे आ तिवारी जी के लिंग का झमेला से अलगे रहे के राय पक्का मिल गइल। कोसल्यायन जी ई भी कहले कि भोजपुरी सब्दन के माने खड़ी बोली में लेख का नीचे भा अलगे एक पन्ना में जरूर दिआय।

साँझ के सम्मेलन फेर बइठल आ कौसल्यायन जी, तिवारी जी के भासन खूब मन से सुने लायक भइलन स। प्रस्ताव पास हो गइल आ रात के आठ बजे से बारह बजे तक कवि लोग आपन

www.bhojpurisahityangan.com

आखाड़ा जमावल । जमशेदपुर में जमवलन जीवन जी । वाह ! खूब, 'मिले हमारे दोनो राजा, कवि तुम भी खावो खाजा; " त मैदान मार लेलस। दिनकर जी आपन धुँआधार गर्जन कइँलन बाकी मैदान रहल 'जीवन जी' का हाथ ।

दोसरका तीसरका दिन डिमना बान्ह, तेलको, टीन प्लेट, टिस्को सभ देखल गइल। कारखाना देख के कवि लोग के सभ कविताई भुला गइल । एक दम जमपुर के नक्सा सामने लउकल। छन्द प्रबंध से भी टेढ़--टाढ़ मसिन के पुरजा। कहीं लोहा अइसन कठोर पदार्थ पानी नियर भभ--भभ बहत लउकल त कहीं तीन हाथ के लोहा के सिली छन भर में १५ हाथ के छरका होत आ तुरते तीस हाथ के गाटर होत देखाइल । ठीक जम्ह का दूत नियर अजब--अजब पोसाक पेन्हले आदमी काम करत रहन । हमरा आहीजे बुझाइल कि एकर नाँव 'जमपुर' होखे के चाहीं, एकरा में से 'शेद' निकल जाई त कवन हरज होई ? कारखाना में आदमी के ऊहे रूप वा आ कारखाना त दइँत बड़ले वा !

जमशेदपुर के कारखाना बीच में बा आ ओकरा चारो ओर बिस्टोपुर, कदमा, साकची, बरमा माइन्स वोगैरह नाँव के बस्ती आ बाजार बाड़न स। सभ के बनावट सजावट एक से एक बा । बाकी साकची बिस्टोपुर के बाजार सब से बढ़ल--चढ़ल बा। समूचे नगर चूके नए बसावल ह एह से सब साफ, सुथरा आ सुन्दर बसल बा। एक त पहाड़ी इलाका एह से जे भी पानी--ओनी गिरल से नाला धइलस दोसरे मकान सड़क का बीच में जमीन बा जवना में फूल-फुलवारी बा एह से कूड़ा करकट सड़क प आइये ना सके। सड़कन के नाँव भी खूब बाड़े स । तिस्ता रोड, जमुना रोड, कोसी रोड वगैरह ।

एह नगर के सब से मसहूर गाँव ह 'नार्दन टाउन', ई एहीजा के बड़--बड़ अफसरन के गाँव ह। मकान खूब फैलाँव, बाग- बगइचा, फूल-फुलवारी सभ निमने-निमन । आदमी भी एक से एक सुधर आ ना सुधर त कपड़ा--लत्ता पहिर के, सेंट--पाउडर मल के सुधर बनल । कादो हर घर में परी के बास बा । परी रात के उड़ के इन्दर के सभा में नाचे भी जालीस आ इआर का गला में गलबाहीं भी देवे चल जाली स आ इआरन के उड़ा लेआवे के भी छूट बा। ओह जगह पर एकर कवनो मन्हाई नइखे। हम केनहूँ उड़लीं त हमरो घरे केहू उड़ आइल । एह से लोग कहत रहे कि अदले-बदले बा, केहू का कवनो टूटी नइखे ।

जमशेदपुर में नया सभ्यता उगत बा। ई हमरा भारत से भिन्न बा। एकर आपन रंग रवइया बा। हमरा घर से ऊ जतना दूर बा ओतने ऊ हमरो से दूर हो गइल बा। ऊहाँ नाया भयवधी के जनम होत बा । जात--पाँत जाय चाहे रहो बाकी भयवधी रही। पुरनका जात--पाँत के मार के ई नया जात--पाँत बनाई बाकी ओइसने । अबही तक सगरे खानेपान एक भइल बा बिआह सादी ना बाकी दोसरा के घर में समा जाय में ना तब जात रहे ना अब बा। जमशेदपुर में एकर अधिका छूट बा । ओहीजा आदमी चिन्हातो नइखन, शर्मा माने बाभन भी, लोहार भी, बढ़ई भी। जात जाई त जाव हमरा एकर फिकिर नइखे बाकी ई इजाफा काहे के जब ओकरा जाहीं के बा ।

जमशेदपुर में सब देस के आ सभ जाति के आदमी बाड़न । सभ के आपन संगठन भी बा । बिहारी भाई लोग के भी एगो बिहार एसोसियसन बा। नाँव भर बिहार बा असल में हिन्दी भाषी लोग के ऊ ह। हमरा बुझाइल कि सब से दूबर--पातर इहे लोग बा। एकर वोजह भी बा, वाजिब भी। बिहार, बड़ा पवित्र नाँव मठन के रहे, बड़ा जल्दी बदनाम होगइल, बेचाल का चाल से आ ऊहे नाँव पड़ल एह

www.bhojpurisahityangan.com

देस के। बड़ा बदनाम नाँव बा। जहाँ जा बिहारी के सिकाइत सुनी। हमरा से कहल लोग कि दोसरा देस वाला बड़ा नीच निगाह से देखलन स। हम कहलीं कि बहुत ठीक। बिहारी सब्द में उहे ध्वनि बा जवना के माने होई मजा करे वाला—आनन्द मनावे वाला। का जाने बौद्ध मठन के नाँव बिहार कइसे पड़ल बाकी 'करत बिहार बिहारी मधुबन में', केकर दो पद्य है, अपना गाँव में रामायन के बानी के रूप में पुरनिया लोग के गावत सुनले रहीं; ओकर इहे अरथा बा; जवन हम लिखले बानी। मजा उड़ावे वाला मर्दानगी ना कर सके।

बिहारी लोग का बाबू कुँअर सिंह, राजेन्द्र बाबूजी, स्वर्गीय रामअौतार शर्मा जी पर बड़ा घमंड बा। ई बाजिब भी बा बाकी मँगरू-ढोढाई का बारे में का राय बा—उनकर पुछबइया के बा? एह लोग के जमशेदपुर में सत्तर हजार के आबादी बा मगर दम तनिको ना। बड़का आपना रंगरेली में मस्त बा। जार्जेट के साड़ी पहिरा के मेहरारू आ लइकिन के दुर्गापूजा देखावे के नाँव पर पइसा पानी नियर बहत बा बाकी भयवधी में देवे में जान निकल जात बा। रउआ अपने पेट से फुरसत नइखे त रावा पाछा के लागी? एकर फल होई कि एक दिन हम धँगाइब त दोसरा दिन रउआ। पार्टी बन्दी से केहू ना उठी आ ओहिजा भी ई रोग बा। हिन्दी-साहित्त सम्मेलन के अधिवेशन ओह नगर में भइल जहाँ एक-एक आदमी के अइसन सम्मेलन करावे के पइसा आ ताकत बा बाकी ओहीजा डाक्टर उदयनारायण, प० जगन्नाथ मिश्र, माधवजी आ कौसल्यायन जी के पेट ना भरल, प्रातिनिधिगन के त जाये दीं। ई इन्तजाम बिहारी लोग के रहल हा। ओहीजे दुर्गापूजा भइल हा आ एक-एक महल्ला में पाँच हजार सात हजार, दस हजार खरच भइल हा एकर माने ह संगठन।

जमशेदपुर के भासा ह भोजपुरी,। हम ओरिया, तामिल; तेलगु, बंगला, मराठी, गुजराती बोले वालन के छोड़ के ई बात कहत बानी। सम्मेलन का आलावे आठ दिन हम रहलीं। रहीं त हम आचार्य बैजनाथ राय कीहाँ बाकी जुगसलाई, बिस्टोपुर, नार्दरन टाउन, साकची. आमवाग सगरी के चक्कर मारीं। हमरा वोजह से ना सुभावे से सभ लोग अपना भासा भोजपुरी में बोलस।

एक दिन एगो बूढ़ बैजनाथ राय का घर के सामने बानर नचावे आइल। ऊ कुछ कह के त बनरा के नचावे। हमरा ओकर उनुनाइल कुछ बुझाइल त निगिचा बोला के कहववलीं। ऊ कहत रहेः—

नागपुर के छाँटल चाउर, बुची डाढ़ के पानी;
बइठल-बइठल भात पकावे, केनझर के रानी।
साम सुन्दरी पाकल कुन्दरी,
माया के मुँह देखले, झोलेले खपरी
बाप घरे रहबे नोनी, दालभात खइबे।
ससुरार जइबे नोनी, ठेंगा चार खइबे।

बैजनाथ राय त हमरा जवरे खूब दउर ले। श्री रामनरेश तिवारी जी, बिहार एसोसियसन के मंत्री हवे उनका पर भरोसा कइल ही रहीं तले उनकर गाय भुला गइल आ गाय खोजे में उनकर बड़ भाई भुला गइलन। गाय डेढ़ दिन गायब रहल, भाई तीन दिन। बेचारे का अफसोसे रह गइल कि भोजपुरी खातिर कुछ ना कइलन। रणधीर सिंह कांग्रेस कमिटी के मंत्री हवे, बड़ा चलन सार आ मिलन सार। मन करस त भोजपुरी के बड़ा गाँहक बना सकलन आ बनइहें। एक दिन तिवारी जी, रणधीर सिंह आ राय साहेब तीनो आदमी हमरा जवरे चलले त लोग कहल कि अब भोजपुरी काहे ना चली जब तीन संस्था के मंत्री लोग ओकरा प्रचार में चलल। भीमसेन उपाध्याय या शिवप्रसाद शर्मा भी बड़ा मनगराह आदमी बाड़े। शिवप्रसाद जी

www.bhojpurisahityangan.com

दीया आजु जराईं कइसे ?

—पद्मदेव "पद्म"—

घर में मुसरी डंड करति बा, ना अनाज, ना कुछ पानी बा !
रुपया-पइसा कहाँ ले कहीं, ना फूटल कौड़ी कानी बा।
घर अन्हार हमार भइल बा, हमतेवहार मनाईं कइसे ?
दीया आजु जराईं कइसे ?

तन पर चिथड़ा आजु झुलतबा, भूखे पेट सुखाइल बा।
रो-रो लाल धूरि में सूतत, कइसे कहीं भुखाइल बा।
तेल न तरकारी के मीलत, हम तेवहार मनाईं कइसे ?
दीया आजु जराईं कइसे ?

नेतागण दावत खात फिरत, आ टी० ए० खूब बनावत बा।
काम करत उनकर जिनकर जे हलुआ, पुड़ी खियावत बा।
हम भिखमंगा ले भिखमंगा, हलुआ-पुड़ी खियाईं कइसे ?
दीया आजु जराईं कइसे ?

(२८ पन्ना से आगे)

कांपेस के सभापति हईं—इहाँ के प्रभाव बा। इ सभ जाना जमशेदपुर में एक हजार गाँहक बना दी लोग।

जगन्नाथ बाबू उहाँ के बिहारी एसोसियसन के सभापति बाड़े, सम्पन्न भी, रोवदाब वाला भी, ऊँचा अहदो बा आ बिरासत भी बड़ बा। भोजपुरी से नेह बा आ गाँहक बनावे के खुद कहले बाड़े। राम जन्म सिंह आ आर० बी० तिवारी त भारे ले ले बाड़े।

एह घरी जमशेदपुर में जादे अफसर भोजपुरिये बाड़े। ई सब लोग आपस में भोजपुरिये में बात करेलन आ एह लोग के घरनी त भोजपुरी पढ़े खातिर मार क देता। असल में मेहरारून का समझे में तनिको कठीनाई एह में होते नइखे। जतना कथा कहानी बा सभ में आपन भासा-आपन भाव बा। ओह में साइने कवनो सब्द मिले जवन ना समुझ में आवे।

जमशेदपुर के हमार ई जातरा बड़ा सफल रहल। एकरा खातिर सम्मेलन के सभापति के हम बहुत अभार मानब जे हमरा के जा ले जाये में कारन रहन। उन कर एक चीट गो सब्द हमरा के जाये के जोर देलन'.स। ओहीजा गइला पर नया अनुभव, नया जान पहचान, नया इआरी दोस्ती आ जमशेदपुर के जानकारी, सभ हमरा लाभे भइल। जिन्ह जाना वादा क के ना पूरा कर्‌गीहें उनकर खबरो लेवे के बल बा काहे कि अब वे चिन्हल के : नइखे।

आखिर रात 'गालाफेट', का जाने एकर का माने होला, नुमाइस कि मेला, देखे गइलीं। सब मंत्री साथे रहन। ई भारतीय नारी समाज का ओर से होत रहे। कई जगह जुआ खेलावे के इन्तजाम रहे। ओह में नीमन—नीमन मेहरारू लोग खूब रँगओंग के बइठावल रही कि सभ के धेयान ओह ओर जाय, बाबू लोग आपन खूब जोर देखावस जईसे धनुहा तूर के बिआहे करे के होखे। नारी समाज के ई नुमाइस चाहे जे कइले होखे बड़ा खराब बात रहे Verey bad taste अंग्रेजी में कहल जा सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

घाघ के बानी

(नर्मदेश्वर " आजाद ") कन्हौली, दरभंगा

भोजपुर का गाँवें-गाँवें "घाघ के बानी" परसिध बा। एकर बनवनिहार "घाघ" रहन। ऊ बाड़ा होसिआर गिरहत रहन; एही से उन्हुकर बानी खेतीए का बारे में बाड़न स। आजु-काल्हु त कवलेज-अवला नवही भाई लोग " घाघ के बानी " से एकदमे खीझि गइल बा लोग। तेही से ऊ बूढ़-पुरनिया लोग का झोरी में, हाथ गोड़ समेटि के, लुकाइल चलि जाता। ओह में से थोड़े खोजि के ऊपर कइले बानी। रावा सभे एकर चासनी लीं. त—

"बिनु बएलन खेति करे, बिनु भाइन के रार।
बिनु मेहरारू घर करे, तीनू कार बे-कार॥

अब बएल बेसाहे अवला के समुझाव ताड़ेः—

बएल बेसाहे जइह कन्त।
लीह खोजि नाया चउदन्त॥
देखीह कतहीं बएल मयना।
एही पार से फेकिह बयेना॥
जो देखिह रूपा-धवर।
रोपेआ दू-चारि दीह अवर॥
लमहर सिंघ चउदन्त हो तवहूँ।
कीनीह मति भुलइलो कवहूँ॥
जेकरा जीभि प करिआ दाग।
बे घरनी ल घर के बाग॥
बएल चमकना खेत में, घर चमकीली नारि।
अबकी बेरा हे दइब! घर के लीह सम्हारि॥
एगो बात तू मान हमार।
बूढ़ बएल से नीमन कुदार॥
नवही बएल, बहुरिआ जेकर।
काल बइठे साँझे ओह घर॥
तीनि बएल, दू गो मेहरि।
गइल घर आ खेती ओकर॥
बरोबरा जोते, पूत चेरावे।
चढ़ते जेठ भूसहुल छापे॥
सावन सारि में उड़े धूरि।
बीस बरिस जोते भरपूर॥
नाटा-खोंटा बेंचि के, बएल धुरन्धर ल।
आपन खेतवा जोति के, दोसरे मँगनी द॥

अब बरखा का बाते में सुनीः—

एक बून्द जल चइत चूए।
लाखन बून्द सावन के मूए॥
हथिआ करे आ चितरा मेंड़राय।
घरे बइठ गिरहत अगराय॥
माघ बरिसले तीनों जाय।

(२४ पन्ना क बाकी)

नीचे बैसाल (Basalt) पत्थल मिलेला जवन अनुमान लगावल गइल बा कि २० माइल तक पावल जाला फेर ओकरा नीचे पेरीडोटाइट (Perido tite) नाँव के पत्थल १००० माइल तक मिलेला। ओकरा बाद लोहा अउरी पत्थल मिलल रूपमें पावल जाला जवना के 'पैलासाइट' (Pallasite) भी कहल जाला ई पैलासाइट २,००० माइल नीचे तक पावल जाला। ओकरा बाद नीचे नीकेल आउर लोहा मिलल पिघिलल रूप में बा जवन पृथ्वी के केन्द्र के चारो ओर फैलल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

गोहुँम, गाय अउर बेवाय ॥
हथिआ बरिसे तीनि आवे,
धान, सक्कर, आउर माँस ॥
हथिआ गइले तीनि मूए,
कोदो, तीलि, कपास ॥
उत्तिम खेती, मध्यम बान ।
निखिद्ध चाकरी, भीखि निदान ॥

बाप पूत मिलि खेती करीं ।
बाप का मुअले भाई के धरीं ॥
दोसरा सँग मति करीं खेत ।
जो करीं त रही स—चेत ॥
पहिले गोहुँम, पाछे धान ।
जे करे ऊ साँच किसान ॥

मेहरारू अउर मुँह ?

श्रीमती मनोरमा सिंह

(एगो छोट शहर में रमेस नाँव के आदमी रहत रहन जे कि एगो आफिस में काम करत रहन आ ओहिजे अपना बेकत बाला संगे रहत रहन एक दिन उनका मेहरारू से उनका खटपत भइल तवने के हाल इहाँ दिहल जाता)

रमेस—ललनवा के माई तें चुप रहबे कि ना ?

ललन के माई—आजी त हम कुछ कहतानी ?

रमेस—हम कहतानी कि चुप रह ।

ललन के माई—त घर में आग लागत रहो आ हम ठाढ़ होके देखत रहीं ?

रमेस—ए भाई ! एकर आज का मन बा ? हमरा त कुछ बुझाते नइखे

ललन के माई—मन त हमार इहे बा कि रवाँ बता दीं कि कहाँ गइल रहलीं हाँ ?

रमेस—गइल रहलींहाँ तोहरा ननीअउरा, अउरो सुनबु ?

ललन के माई—अरे तनी ठोक से बतादीं बस कि कहाँ गइल रहलीहाँ, गारी बकला से का फयेदा ?

रमेस—हमरा बुझाता कि आज तोर पीठिया ककुलाता । हम एके हाली उठब आ तोर खोखमल छोड़ा देब ।

ललन के माई—आ हम आज राउर जान बे जनले छोड़बे ना करब कि रावाँ अतना रात के कहाँ से आवतानी । दू-दू गो लईका घर में बेराम बाड़न स ओहनी के कुछ फिकिर ना । रावाँ बताईं आज कि एह बेरा ले कहँवा रहलीहाँ ?

रमेस—हम कतहूँ रहलींहाँ तोरा एहसे मतलब, ते आपन घर के काम देख ।

ललन के माई—हमरा मतलब बा तबे नू पूछतानी जी ?

रमेस—अच्छा त ले तोरा के बतावतानी कि कहाँ रहलीहाँ हम । (डंटा लेके बड़ी मार रमेस मारतारन, अइसन मरलन कि ललन के माई लगली चिचिआये) मोहल्ला के पाँच छव गो मरद—हँ-हँ-हँ-हँ रमेस ई का करतार ?

रमेस-का करतानी, जवन करेके चाहीं तवने करतानी

मरद—आखिर बात का ह मरदे सुनऽत ? (रमेस रूक गइलन)

रमेस—बात कुछो होखे । एकरा के बार-बार कहिला कि ते खाली अपना घर के काम चुपचाप मुँह बन कके करत रह, तोरा एह से का मतलब कतहूँ आईं जाईं । बाकी ई जरूर पूछी । भला बताईं मेहरारू अउर मुँह ?

मरद—हँ भाई तब त तोहार मारना वाजिबे बा । कह भला मेहरारू जात का एह से का मतलब ? ओकर मरद कतहूँ जाओ, कबो लवटो । ओकर अतना मजाल कि ऊ पूछ बइठी कि तूँ

www.bhojpurisahityangan.com

कहाँ गइल रहल हा। मेहरारू आ मुँह ? ते ठीके कइलेहा इयार मेहरारू जात के मुँह खोलला पर इहे दवाई देबे के चाहीं जवन तू देले हा।
(एतने में चार पाँच गो मेहरारू लोग हल्ला-गुल्ला सुनके चल अइली।

मेहरारू—अरे काहें ए ललन के माई काहें रोवतारू ?

ललन के माई—(सिसकी लेत जवाब देतारी) का कहीं ए बहिनी- हमार कुछ कसूर नइखे। हम इहे अतना पुछलीहाँ कि रावाँ कहाँ गइ रलींहाँ। काहेंसे कि दू-दू गो लइका बेराम, खटपर भइल बाड़न स। एगो त बीस दिन से बेराम बा आ एगो पनरह दिन से। ओह दूनों के जर टूटते नइखे। आज जान लीहीं सभे कि बड़का लइकवा के जर अइसन तेज हो गइल हा दुपहरिया में कि लगुवे अक-बक बोले। आ केहू रहल हा ना कि डकदर किहाँ भेजीं। एहिसे मन बड़ा पितपिता गइल हा तब, जब ई एह आधा रात खा लवटलन हाँ त बस इहे पुछलीहाँ कि रावाँ कहाँ गइल रहलीहाँ। इहे बतिया के तनी कए हाला पुछली हाँ। इहे पुछबू कि जईबू कहाँ लगलन हा सोटवसे।

मेहरारू—राम-राम, कह भला अइसना गाय मेहरारू पर हाँथ छोड़े के चाहीं।

एक मेहरारू—का कहीं ए सखी हमरो घर के इहे हाल बा। चुप रह जाय द।

दूसर मेहरारू—हँ ए ललन के माई इहे हलिया एनहूँ बा। तू त जानते बाड़ू कि हमरा मुसमात भइला छव बरिस भइल जानलीह कि हम अइसन दुःख काट तानी कि का कहीं। एक दिन तनिकी एसा अपना देवर ले हम कहलीं कि रवाँ जब हमरा के भर पेट खाये, पहिरे के ना देब तब हमार हिस्सा बाँट दीं। बस ए ललन के माई जनिह जे उनका कं के कहो गाँव भर के मरदाना उनका संगे दूसरा दिन जूटलन हमरा अंगना में। हम त भीतर घर में लुका गइलीं। अउर ऊ लोग लगलन कहे कि हई देख मेहरारू भ के मुँह खोलतिया। कह भला मेहरारू आ मुँह ?

तिसर मेहरारू—रामजी हमरो किसमत अइसने देले बाड़े। बुचिया के बाबू से एक दिन कहलीं कि अजी रउरा त रोजरोज सिलेमा देखे आरे जाइला, तनी हमरो के "सन्त तुलसीदास" सिलेमा देखा दीं ना। सुनलीहाँ कि ओह में राम लछुमन के बड़ा बढ़िया मूरत देखावेला। त कहताड़न का कि चुप-चाप तू घरे के कुल काम कर; इहे तोहरा खातिर सिलेमा बा। हम कहलीं कि रावाँ रोज-रोज जाईं आ हमरा एको दिन ना जायेके मिलो। अतने में तड़पके बड़ी दूर ले हमरा लगे चल अइलन आ थापरा चला देलन, मारे खातिर। बाकी हम पाछा हट गइलीं। ऊ लगलन चिचिआये, कहे कि "आज से तू मुँह खोलबू त हम तोहरा के बताइब। मेहरारू आ मुँह ?"

चौथी मेहरारू—अरे ए बहिनी का कहीं "कोठा चढ़ देखा, घर घर एके लेखा" वाला बात बा। फुलबासो जे बाड़ी, हमार ननद उनकर भइया त अइसन चिरनइल हवन कि कुछ कहहीं के ना। ऊ त कवना दो पाटी के नू हवन। परसाल जब ओटवा दिआत रहे तब हमरा से कहलन कि हमरा पाटी के बकसा में ओट दीहे आ हम सुनले रहीं कि गान्हीं बाबा के पाटी वाला बकसवा में ओट देला से ऊ पाटी जा जीतो तब मेहरारून क कुछ हक मिली। एहीसे हम कहलीं कि हम बएलवा वाला बकसवा में ओट देब। इहे सुनते ए बहिनी, भंडा हाँथ मे ले ले रहन, उहे चलाइए नू देलन। कपार में ऊ आके अइसन लागल जे गिलट निकल गइल। ऊ लगलन कहे कि चुपचाप भले आदमी नियन जबान बन कके जवना बकसा में कहतानी तवना में ओट दीह जाके। हुँ ह मेहरारू आ मुँह।

www.bhojpurisahityangan.com

बोरो

रूसी उपन्यास

गतांक से आगे

ले० वण्डा वासिलवेस्का

अनु० रघुवंशनारायण सिंह

ऊ रेकर्ड चढ़वलस बाकी तुरते सुनलके गीतकन के सुन के अकुता गइल। ऊ केहू से बतिआवे के चाहत रहे मगर कहो त केकरा से कहो। रसोई घर में गइल आ बलटी में से थोरे पानी निकललस। फिडोसिया चूल्हा का भीरी तिपाई पर बइठ के आलू छिलत रहे। पुसिया जंगला का भीरी बेंच पर बइठ गइल आ देखत रहल आलू के छिलिका के जे फिडोसिया के अँगुरीन का बीच से लामा पातर फीता लेखा नीचे टोकरी में गिरत रहन स।

"बहुत छोट आलू बाड़न स ?" पुसिया कहलस। फिडोसिया चुप रहल।

"का ई बराबर अइसने मिलेलन स ?"

फिडोसिया फेनु चुप।

"तूं हमरा बात के कबहुँ जबाब काहे ना द ?"

फिडोसिया मुँड़ो ऊपर उठवलस आ पुसिया का ओर देखलस, साफ, बेलाव लपटाव के–बे मन के। ऊ फेनु अपना काम में लाग गइल।

"एह तरह से हमरा ओर काहे देखत बाड़ू ? हमहुँ आदमीय हईं। सउँसे दिन हमरा से बतिआवे वाला केहू ना। अइसन हालत में त केहू के जिन्नगी दूभर हो जाई।"

ऊ सोच से भर गइल। ऊ सोचे लागल कि कास, चाकलेट बचा के रखले रहतीं त ऊ मन बहलावे के एगो अच्छा मसाला रहीत। ऊ चटोर औरत रहे। कर्ट के ले आइल कवनो बतुस संच के ना धरत रहे। जवे पावे तवे चट कर जाय।

खउलत कड़ाही से एगो आलू उछिल गइल जवना से पानी के कुछ छिटकी बिखर गइल।

"हमार खिआल बा कि हम तोहार कुछ नइखीं बिगड़ले। का हम कुछ कइले बानी ?"

जबाब पावे खातिर फिडोसिया का ओर ओकर करिअवा आँख देखे लगलन स। तबो ओकरा क उत्तर ना मिलल।

"हम बराबर इहाँ अकेले बानो। कर्ट छन भर खाती आवेला आ चलं जाला। कोई भी अइसन नइखे जेकरा भीरी छन भर बइठीं आ बतिआईं। रात दिन पाला पड़ रहल बा जवना से बाहर निकलल भी दूलम हो गइल बा। हम त इहाँ पागल हो जाइब। फेनुगिलास, फेनुगिलास रात दिन फेनुगिलास ? रेकर्ड के त सभ गीत हमरा इआद बा। का तू फेनुगिलास सुनल पसंद करलू ?"

खीस का मारे ओकर मुट्ठी बन्हा गइल आ अतना जोर से बन्हाइल कि ओकर नोह तरहत्थी में गड़ गइलन स।

"तू हमरा से बोलत काहे नइखू ; का हमरा पिलेक के बेमारी भइल बा ?"

फिड़ोसिया आपन सिर उठवलस। "पिलेक से भी तोहार बेमारी खराब बा। हँ, ओह से भी भेअरनक

www.bhojpurisahityangan.com

आ तोहार मउअत पिलेक से होखे वाला मउअत से भी बदतर होई।"

पुसिया आवाक हो गइल। ओकर गोल आँख अवरू गोल हो गइल। ओकरा कबहुँ बिस्वास ना रहे कि झिड़ोसिया बोली बाकी अचके में ऊ आपन मौन तूड़ देलस, जेकरा के ऊ महीना भर से सधले रहे। आ बोलल भी त कइसे? अब हम का करीं? रोईं, चिलाईं, झपट के ओकर मुँह नोच लीं आ कि अपना कतरा में चल के सब, ऊँचा आवाज में हल्ला करे वाला रेकर्ड चढ़ा दीहीं—ऊ एक लहमा में सोच गइल। मगर अचरज त ई बा कि ऊ कुछ ना कर सकल।

"तू हमरा से का चाहत रहू। एकरा छोड़ के हम अवरू करिये का सकत रहीं? भूखे मरतीं? अच्छा दिन के राह देखतीं? काहे खातिर? ऊ लोग इहाँ राज करे खातिर आइल बा। हमरा अपना खातिर कुछ कर लेना रहे। सेरिओजा साइत बहुत दिन पहिले मर चुकल होई। जहाँ तक हम जानत बानी कर्ट कवनो खराब आदमी ना ह। एह से अधिका का चाहीं? हम इहाँ जादे दिन रहे के नइखीं चाहत। हम काफी भोग चुकलीं। ऊ हमरा के अपना साथे ड्रेसडन ले जाई। ऊहाँ के जिन्नगी इहाँ के बनिस्पत सुख देवे अबला होई। इहाँ के जिन्नगी भी कवनो जिन्नगी रहे। कुछ पहिरे के ना। एक जोड़ी पैताबा खातिर चिंता आ बराबर ई डर सभाइल रही कि कहीं फाट ना जाय। तोहरा ई मालुम बा कि एक जोड़ी फटला पर दोसर पा गइल कतना आसान बा?"

"इहे तू हऊ? इहे तोहार रूप ह। इहे ह जे हम कहत रहीं।.....पैताबा.....। एगो तोहरे बहिन बीआ–सभ्य, शिष्ट, सालीन, जेकर लोग इज्जत करेलन। ऊ लड़िकन के पढ़ा के आपन काम चलावेले। एगो तू बाड़ू जे पैताबा के जोड़ी खातिर अपना आत्मा, आपना जनम भूइं, आपना अभिमान आ नारी के सब से बेस कीमत चीज आपन इज्जत के बेंच देलू। जे कुछ तू हऊ ऊ कह के हम आपन जबान खराब करे के नइखीं चाहत आ तोहार कर्ट तोहरा के कहीं ना ले जाई। ऊ तोहरा के बोसहीं फेंक दी जइसे कामी आदमी आपना वासना के पूरा भइला पर अपना चहेती औरतन के दूध का माँछी नियर निकाल के फेंक देलन। अपना जावे का पहिले तोहरा के गड़हा में डाल दीही। तूँ बाजी लगा सकलू, ऊ अइसने करी जब तक हो सके गुलछर्रा उड़ाल, मउज कर ल आ अपना जर्मन दोस्त के साथ हमरा घर में मोलायम बिछौना पर सूत ल–हँ अइसन क ल। ई तोहार जोड़ी बहुत दिन ले बरकरार ना रही। ऊ दिन दूर नइखे जब हमनी के अदमी अइहें आ तोहरा के असलिअत के पता बतला दीहन।"

पुसिया सिकुड़ के बेंच पर बइठ गइल। फिडोसिया के सही आ सीधा बात ओकरा चाभूक निअर लागल। खीस का मारे काँपत आवाज में ऊ रोक-रोक के कहे लागल।

"अच्छा-अच्छा हम कर्ट से कह देव कि तू जब पानी ले आवे जालू त अतना देरी कहाँ लगा देलू। हँ, आज जसही ऊ आई हम कह देब।"

फिडोसिया फानल आ आलू के सब छिलकोइया छिटा गइलन स। छूरी गिर के झनझना उठल। आगे का ओर नवल, मुँह के रंग तेज बनवले ऊ पुसिया का भीरी पहुँचल। ऊ डेरा गइल, ओकर चेहरा पींअर हो गइल। ऊ आपन गोड़ बेंच का नीचे घूसा लेलस आ ओकर हाथ अपने से छाती पर आ गइलन स, जइसे ओकर हिफाजत करीहें स।

"ई तू कइसे जनलू कि हम कहाँ जाइले, कइसे?"

पुसिया का इआद आइल कि निगिचे जंगला का नीचे संतरी पहरा देत रहे आ एके पुकार ओकरा के बोलावे खातिर काफी होई। एह विचार से ओकरा दम मिलल।

www.bhojpurisahityangan.com

"हम सब कुछ जानत बानी जवन हमरा जाने के चाहीं।"

"तूँ.....?"

फिडोसिया के मन भइल कि उनकर गरदन पकड़ के टीप दे, ओकरा के गइल गुजरल मूस नियर कचट देव। बाकी ऊ अपना एह इच्छा के बरबस दबा देलस। ओकर कमजोर आ दुनुकाह देह के छूअवला के खिआले ओकरा हिरदया में घिरना के भाव जगा देलस—बोइसन घिरना जइसन कवनो नीमन देह-धजा वाला आदमी का रोगी भा कुरूप भा अंगभंगू भइल आदमी के देखला से होला। ऊ थूक फेंकलस आ लौट के चूल्हा का भीरी स्टूल पर बइठ गइल आ फेनु आलू छिले का काम में जल्दी से लाग गइल। बड़हन आलू छीलत खानी ओकरा हाथ से फेंका गइल आ पानी के बर्तन में गिर के पानी के उछला देलस जवन सहन पर छितरा गइल। पुसिया मुँह तान के अपना कमरा में फेनुगिलास बजावे चल गइल। रेकार्ड देखे लागल। पहिले त ऊ खूब बढ़िया, मन मोहे वाला, एक दम सुन्दर रेकार्ड देखे लागल कि आखिर में ऊ चिंतित हो उठल। अपमान रह-रह के काँटा नियर गड़े लागल आ पहिले के सब सोचला समुझला के खिलाफ दोसर रेकार्ड चुन लेलस। फिडोसिया आलू छिलत गइल आ ओकरा बुझाये लागल कि ओकर दिल बइठल जात रहे। अतना त ऊ जानते रहे कि पुसिया जर्मन से जरूर कही। ठीक साइत पर काम में लेआवे खातिर, ऊ एह भेद के, एक जहरीला साँप नियर आपन जहर छिपवले रहे। आज बदला लेवे खातिर ऊ कहबे करी।

सुते वाला घर से एगो पातर छीन गीत के आवाज आवत रहे।

आखिर होई का? ऊ एहबात के खूब जानत रहे कि अफसरवा एह बात के असही ना जाये दी ही, पछिला लड़ाई में जे लोग मारल गइल रहन ओह लोग के आखिरी किया करे पर भी रोक लगा देल गइल रहे, ऊ अबही तक जइसे के तइसे रहे। गाँव का भीरी गड़हा में ओकनी के लास असही हवा, पानी, पाला आ कउआ-चील्ह का मरजी पर पड़ल रहे देल, लंगटे भा वे विरोध के जइसे तइसे रहे देल, लोग के मन में डर पैदा करे आ जरमनी के जीत के चिन्ह के रूप में रहे। पहिले किसान लोग मृतक के माटी देवे के जतन कइले रहे बाकी ऊ लोग सफल ना हो सकलन काहे कि गड़हा पर बराबर पहरा रहत रहे। नवही पाश्चुक एक दिन कुदारी लेले चुपे पुल तक पहुँच गइल रहे बाकी ओही रात से ऊ आउर लोग के साथे छाती में गोली के घाव लेले, बरफ के तकिया बनवले पड़ल रहे। एह से सभ चीज असहीं पड़ल रह गइल। सभ लोग का विश्वास हो गइल कि एह हालत में कुछुओ कइल संभव नइखे।

बाकी गाँव भर में केहू के लड़िका ऊहाँ ना रहे, ओकरा अलावे केहू के ना। ई खाली बास्या के भाग में लिखल रहे कि ऊ ओह टुकड़ी में सामिल रहे, जवन ओह गाँव मुँहे जात रहे। ओह घरी कतना खुसी रहे, ऊ अचके मे हँसत झोपड़ी में समा गइल रहे, हरदम नियर हँसमुख चेहरा लेले, एक छन खातिर। लोही लागे के बेरा रहे जब ओह लोग का एकर पता ना रहे, एका एक जरमन आके घेर लेलन स बास्या भी ओही टोली में रहे जवना के ओहनी का खाँई के पास घेर के खतम कर देले रहन स।

ऊ ओकरा के ओही दिन पा गइल रहे। ओकर दिल ओकरा के ओहीजे ले गइल रहे जहँवा ऊ पड़ल रहे। ऊ एकदम मर चुकल रहे आ ओहनी का ओकर कपड़ा उतार चुकल रहन स।

आज से एक महीना हो गइल, ऊ रोज ऊहाँ जात रहे आ अपना बेटा के देखत रहे। ऊ देखले बीआ कि कइसे ओकर देह काड़ा हो गइल, कइसे ऊ बदल गईल, कइसे बरफ ओकरा चेहरा के करिया कर देले रहे—लोहा नियर करिया आ ओकरा

www.bhojpurisahityangan.com

खाली गोड़ के फाड़ देले रहे। ओकरा एकर आदत हो गइल रहे–लकम लाग गइल रहे, रोज एक बेरा कहियो दू बेरा भी जब्बे ऊ पानी लेवे जाई तबे अपना मुअल बेटा के देख लेत रहे। आ अब? अब का होई?

.....फेनु गिलास गावत रहे। जइसन होत रहे ओइसन ऊ होखे ना दी ही, ऊ अब एकरा के अनदेख ना करी। ओकरा अपना खातिर भय ना रहे, ऊ डेरात रहे अपना लइका, अपना मृतक पुत्र खातिर, जे ओह खाईं में माराइल रहें, बरफ से कठोर-पत्थर हो गइल रहे; ओह बेटा खातिर जेकरा पुटपुर में गोल गोली के गहीड़ घाव रहे। ई कुछ अइसन बुझात रहे जइसे ऊ ओकरा के फेनु से भुलवावे जात रहे। ऊ ओकरा के कतहीं अनजान गड़हा में फेंक दीहेंस, ओकर अपमान करीहन सन ओकरा के बदसकल कर दीहन स–ऊ एकरा लायक बाड़नस, ओह से भी अधिका.....।

.....ग्रामोफोन गावत रहे। पुसिया सपना का दुनिया में विहार करत रहे। ऊ दसवाँ बेरा एके रेकार्ड के चढ़वले रहे। ग्रामोफोन पहिले के प्रेम, बीतल खुसी, अवरु ओइसने सबद के गीत गावत रहे जवना के अब कवनो अरथ ना रहे। चूल्हा भीरी बइठल औरत के थाकल विचार रेकार्ड के कोमल सबदन के ही मेल में चलत रहे। फिडोसिया आपन भोथर छूरी हाथ में दाबलेलस लेकिन कवनो तरह के पीड़ा के अनुभव ना कइलस। कटलका चमड़ा से खून के बूँद आ गइल। ऊ अपना अँचरा का छोर से हाथ पोंछ लेलस।

.....फेनुगिलास गावत जात रहे अब ओकरा का करे के चाहीं? अब ऊहाँ ऊ कइसे जाई? ओकरा अइसन बुझाइल जइसे ओकरा बास्या के जान बचावे के रहे,—ओकरा बचावे के रहे मऊअत से भी भयानक, ओकरा से भी विकराल कवनो जीव का पंजा से। बाकी कइसे? ऊ जानत रहे कि बास्याके ऊहाँ से कहीं दोसरा जगह ले गइल असंभव रहे। बरफ ओकरा के अपना अनुरूप बना लेले रहे। खाली बसंत रितु के गर्मी ओकरा के एह बरफ के फाँस से छोड़ा सकल रहे। बाकी, फेरू जब उ सिकुड़ गइल रहे तबो अतना लामा त रहले रहे जतना १५–१६ बरिस का उमिर में रहे। तब ऊ ओकरा के कइसे उठा सकेले। ऊ ओकरा के कहाँ ले जाई, ओह राछसन का नजर से ऊ ओकरा के कइसे लुका सकी.....। ग्रामोफोन गावत रहे।

जरमन के हत्यारा पंजा ओकरा के छुई। पापी जरमनन के जूता ओकरा के ठोकर मरीहे से। भेयावन जरमन ओकर मुँह बिरइहन स आ खूब ठहाका मार के हँसीहन स आ साथ ही ओह में कप्तान कर्ट के कूट भरल हँसी रही। फिडोसिया अपना असहाय लाचारी पर हाथ मले लागल, ओकर निरासा सीवाना लांघ गइल रहे। ऊ आलू के, ओह आग के भुला गइल जवना पर भुअर-भुअर राख के परत पड़त जात रहन स। ऊ चूप-चाप बइठल रहल —सूना में देखत रहल। ऊ सोचत रहे कि जवन चोट ओकरा छाती में लाग चुकल रहे ओकरा से बढ़ के दोसर बिपत आना सके। लेकिन ओकरा बुझाइल कि बात अइसन ना रहे। दिसंबर में बिपत के जवन बदरी गाँव पर मेड़राइल ओकर अन्त ना लउकत रहे। उलटे ऊ दिन-दिन बढ़ते जात रहे–भेआवन होत जात रहे। अचानक ओकरा दिमाग में एक बात आइल। ओकरा ई बात कइसे मालूम भइल? के ओकरा से कहल?

जानल पहचानल चेहरा ओकरा माथा के सोझा घूमे लगलन स। मास्टर? फिड़ोसिया तुरते ओह सन्देह के अपना दिमाग से दूरदूरा देलस। कवनो हालत में अइसन बात ना हो सके। तब के? हूँ, एह में सन्देह ना कि गाँव के लोग जानत रहे। बाकी गाँव के सब लोग ओकर आपन आदमी रहन।

क्रमशः

www.bhojpurisahityangan.com

दही-बाड़ा

श्री चटोर

बहुत दिन पहिले हम कहले रहीं कि "सास पतोहिया एके होइ हें, भाभा कुटन घर-घर जइ हे।" बात त जनलके रहे खाली लोग ना मानत रहे। अब जब भारत के महा-मंत्री जी ही मनले त के ना मानी हमरो पाठक लोग मान जाई कि 'मिले हमारे दोनों राजा।' अबकी मुंगेर में अनुग्रह बाबू आ श्री बाबू अइसन प्रेम से गले-गले मिलले हा कि ई गाढ़ा लिंगन देख के जवाहर लालजी का रोआई आ गइल हा। भरत मिलाप के नक्सा इहाँ झूठ हो गइल रहे।

× × ×

जवाहर लालजी भी हदे आदमी बाड़े। एक ओर त ऊ मुंगेर तक जाके श्री कृष्ण सेवा सदन के ताला खोल अइले आ जब पटना में लेचर देवे लगले त कहले कि विस्व विद्यालय में ताला बन कर देंगे। आ एगो दूगो ना उनका चालीस गो ताला चाहीं। थन्डर लोक कम्पनी आ गोडरेज का आपन टेण्डर लेके पहुँच जाये के चाहीं। लइकन के त जनने छेड़ी लोग ओतने धधइहन स काहे कि बाबा कहले बाड़े कि बर्रे बालक एक समाना। तब त भारत मंत्री का हर स्कूल कालेज में ताला बन करेके पड़जाई तब त चालीस से काम ना चली।

× × ×

श्री बाबू आ अनुग्रह बाबू के मिलन के बात सुन के एक भाई पूछत रहन कि ई साँचो के लोग मिलल रहल हा कि शिवाजी साइस्ता खाँ के मिलन रहल हा। अब ई के कहो, हमरा त नइखे बुझात 'जानी न जाई' निसाचर माया कालरूप केहि कारन आया' मौजी रामजी के एह पर कुछ बेआन जरूर होई। उनकर प्रवचन सुने खातिर पाठक लोग का तइआर रहे के चाहीं।

× × ×

विधान सभा के मेमरवो हदे बाड़न लोग। ई लोग भी रोज एको ना एगो प्रपंच रचते रहेला। पाटी के नेता का एह लोग के खुसामदे में ढेर खरच करे पड़ेला। एह घरी मद्रास के बड़का मंत्री श्री राजगोपाला चारी पर ई लोग पड़ल बा आ उनका साथ रोज बदी रोपात चल जाता। बाकी भाई राजाजी भी मरदे बाड़े। एह बुढ़ापा में भी सकस कह देलस, कि अच्छा आव लोग देखल जाई। जवाहर लाल जी फरके कुड़कुड़ात बाड़न कि एह बूढ़ के जरी लोग काहे लागल बा।

× × ×

बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति जी आपना भासन में टाटा से तीन लाख रोपेआ के तकाजा कइलन हाँ। अगर टाटा का मिजाज में ई बात ढूक जाय आ ऊ तीन लाख देदेस तब त हमरा कवनो इन्कार नइखे बाकी ई डर जरूर बा कि राजनीतिकवन नियर साहित्तिकवा बउरा जइहन आ साहित्त-सम्मेलनवो एगो आखाड़ा बन जाई जहाँ भाई लोग रोज डंड आ बइठक करे लागी। अइसन हालत में साहित्त के सिरजन होई कि गद्दी दखल करे के जोर आजमाई?

× × ×

अब कवि लोग का बुझाये लागल कि उनका आसमान से उतर के धरती पर चरे-चोथे के उपाय करे के चाहीं। ना त ई इआर लोग हरदम आसमानीय बात करत रहे। अभी टाटानगर के हिन्दी साहित सन्मेलन का बेरा अपना पूर जोर भाखन

www.bhojpurisahityangan.com

में श्री राम दयाल जी, सभापति, कवि सम्मेलन, खूब जोर से चिघड़लीं हाँ कि " हमहने का जनता से फरका भइल जात बानी। खाली आसमानी बाते में ना भासा में भी" । अइसन संसकीरित बोली लोग कि केहू का बुझइबे ना करी। अब किताब नइखे बिकात त बुझाय लागल । अच्छा, दिन भर के भुलाइल अगर साँझ के खूँटा पर आ जाला त ओकरा के भुलाइल ना कहल जाय।

× × ×

लखनऊ विस्वविद्यालय के लइका लोग के विद्यालय का अखाड़ा में का जाने कवन दो हक भुला गइल बा। ओकरा खातिर ऊ लोग जुध छेड़ देले बा। विद्यालय के माने त हमनी का जानत रहीं कि जहाँ वाक शक्ति मिले ला जवना से आदमी जबानी जुध करेला बाकी ई छँवड़ा त हाथा पाई करे के तइआर हो गइलन स । अब गार्जियन लोग का ओर से गोली चले लागल। अब बताईं बाप बेटा के एह झगड़ा में के पँचाइत करी।

× × ×

पंतजी के पुलिस त भाई चालाकी में नम्मर मार लेलन स । लखनऊ में उत्पात मचावे वाला लोग जब ढेला फेंकत बा तब पुलिस वाला भी ढेला फेंके लागत बाड़न । हमरा बड़ा फिकिर परल रहे कि एह भला आदमियन का ढेला कहाँ मिल जात बा। अब आज एकबार का जरिये पता लागल हा कि इहो इअरबा ढेला जमा क लेत बाड़नस। वाह भाई ! एकरा के चतुराई कहल जाला।

× × ×

कोरिया में पहिले आग बरिसत रहे आज काल्ह पानी बरिस रहल बा। देखे के बा कि थिमैया साहब के ई पानी अमीरकी आ रूसी आग के बूता सकत बा कि ना ?

× × ×

पटनिया नवराष्ट्र के मउजी राम जी जिनिगी भर कलम घीसते आ डायरी के पन्ना उलटते रह गइले बाकी मगहा के मगहे में रह गइले । हमरा भोजपुरी के चतुरी चचवा चार महीना में अतना तरक्की कइलस कि आरे से काशी चल गइल आ बूढ़े बाबूराव विष्णु पराड़कर के आसीरबाद से आज का दहिने तरफ उपरे विराजत बा।

× × ×

आज काल हमरा देस में सिच्छा सप्ताह मनावल जात बा। लइका पहर रात रहते उठके हला करत बाड़े स कि असिच्छा दूर हो ! अब एह देस के असिच्छा जरूर दूर हो जाय के चाहीं जब बालवृद्ध सभ कहे लागल।

× × ×

हड़तालो के रोग भाई गजब बा। बुझाता कि पिलेक नियर ई सगरो फैल जाई। एह घरी कासी के मलाह गन भी हड़ताल क देले बाड़े। नगर पालिका का भी ई समुझ में ना आइल कि एहनी के पुरखा रामचन्द्र के त सीधा क के ध देलन स त एह लोग के के पूछत बा।

× × ×

भारत के बड़का गवइया ठाकुर ओंकार नाथ जी हैदराबाद में उपदेश देली हाँ कि जवान लोग निरासा छोड़ देस। बात त बिलकुल ठीक बा बाकी आसा के कहीं किरिनो जो लउके तबनु। आकि आसा के पते ना ई निरसवो जेहू धरोहर बा ओकरो के छोड़ देस जा।

× × ×

उत्तर प्रदेस के खेती मंत्री चौधरी चरन सिंह पढ़-निहार से कहले हा कि छात्र चरित्रवान बनें उनका एह बात के पते नइखे कि चरित्रवान बने का पहिले मंत्री बने के पड़ेला।

× × ×

अबकी कोसी नदी के भी दिमाग ठीके होके रही आ हर साल पहाड़ से अतना पानी लेके आवे के आदत छूटिये के रही। संसद मेमरन का उनका उत्पात के खाजना के पता लाग गइल । अब ऊ लोग जवाहरलाल से कह के उनकर उपाय कर दी लोग। उत्तर बिहार के सब लोग का एसों नयका गहूँम से छठ बरत करेके चाहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

पछिला अंक में इहे बात कहल गइल रहे। अबकी भी एही पर कहे के बा। तबकी एगो भरम रहे अब को ऊ भरम अउरू बढ़ गइल। अब पता लागल हा कि बिहार सरकार सातवाँ किलास तक के पढ़ाई मातृ-भासा में करी आ ऊपर जाके ऊ एकदम हिन्दी में पढ़ाई। फेर एफ० ए०, बी० ए० में जाके ५० नम्बर के मातृ-भासा के सवाल पढ़ाई। बिहार सरकार के ई बिचार बड़ा नीमन बा आ एह पर केहू भाई के कवनो उजुर-माजूर ना होखे के चाहीं।

बिहार हिन्दी साहित्त सम्मेलन में लोग प्रस्ताव कइलन हाँ आ एह निरचय के विरोध कइल गइल हा बाकी सवाल ई जरूर बा कि आखिर मातारी का कोरा में लइका जब पहिला पाठ लेला त ऊ कवना भासा में होला ? "बबुआ बाबा क ह" सीखावल जाला कि 'बाबा कहो भा कहिये' सीखावल जाला ? अगर इहे चाल सातवाँ किलास तक चलत रही त अतना बात त ठीके बा कि बहुत बात लइकन का सातवाँ किलास ले बुझा जाई। अँग्रेजवन का जमाना से हीहमरा देस में भासा सीखे के एगो रोग चल गइल बा। ऊ रोग हमनी से अबही तक छूटल हा ना। असल बात आदमी सीखबे ना करे, पर जाला एह फेर में कि माटी कहल ठीक बा कि मिट्टी कहल ठीक बा।

अब एह माटी या मिट्टी का फेर में मूल बिसय हेरा जाला आ डाढ़ पात पर आदमी घूमे लागेला। एह बात के जब खूब धेआन देके सोचल जाई त पता चली कि एह में कतना गलती हो रहल बा। बहुत लोग का खिआल बा कि सभ मातृ-भसन में सब बात के कह देवे भर दमे नइखे आने ओतना सब्दे नइखे। हमरा एगो दोस्त से केहू बोकील कह देले बा कि हिन्दी में कानून बनिये ना सके अब ई भला आदमी भासन में भो ई बात कहत चलेला। असही कुछ भाई लोग का ई खिआल बा कि मातृ भासा में कुल्ह बात ना कहा सके।

हम एह बारे में अतने कह देवे के चाहत बानी कि ना कहा सके त मत कहाव बाकी जतना कहाव ओतना ओह लोग का समुझ में आजाए लायक भासा में कहाव। देस के सैकड़े सनतानबे आदमी के जवना भासा में सभ काम चल रहल बा आ समूचे जिनिगी कट जात बा ओकरा के सैकड़े तीन के बात समुझावे खातिर भासा के नाया झंझट काहे मोल लेत बानी। एकरे के धूर में जेवर बरल कहल जाला। जइसे बचपन में काका, नाना, मामा, सीखावल जाला ओइसे सातवाँ दरजा तक खेत, जमीन, माटी, पाँव-गाड़ी, हवा-जहाज सभ का ह जाने दीं, तब आपन आने दो, जाने दो सिखाइब। ओह में कतना देरी लागे के बा।

एह ममिला में बिहार सरकार से एगो गलती भइलबा। हम नइखीं जानत कि ऊ गलती जान बूझ के भइल बा कि असके भइल बा। अगर असके भइल बा तबो हमरा ओकर धेआन एने खींचे के बा कि सरकार ओकरा के सुधार ले आ अगर जान-बूझ के भइल बा तब त ओकरा के दोसरा तरीका से समुझावे के परी। सरकार नाँव के जे बतुस एह दुनियाँ में चलत बा ओकरा में ई एगो दोस बहुत जादे पावल जाला कि ऊ अपना गलती के बहुत दूर

www.bhojpurisahityangan.com

तक गलती मनवे ना करे । कबहुँ-कबहुँ ओकरा के दबा के त कबूल करावे के पड़ेला ।

एह मसिला में हमरा विस्वास बा कि सरकार से गलती भइल बा आ ऊ असके भइल बा । जब ई बात ओकरा सामने आई तब ऊ बुझ जाई ।

ई गलती भइल बा मातृ-भासा के माने समुझे में । सरकार साइत हिन्दी, उर्दू, बंगला, ओड़िया, मैथिली संताली, कोरवाँ, हो आ मुँडारी के त मातृ-भासा मान लेले बा बाकी भोजपुरी के साथे मगही के ओह दरजा से अलग क देले बा ।

हिन्दी आ उर्दू दूनों के जे रूप भइल बा ऊ केहू के मातृ-भासा ना ह । हमनी के मातृ-भासा भोजपुरी-हिन्दी ह । हम नइखी जानत कि केहू बड़का से बड़का विदवान अपना मातारी से आवो, जावो, खावो, बैठो, शयन-कक्ष में जावो वोगैरह सीखले बा । डालटेनगंज, आरे, छपरा, मोतिहारी, गोरखपुर, गाजीपुर, बलिया कवना सहर में ऊ भासा बोलाला आ ना बोलाय त मेहरारू कइसे सीख गइलीं स आ ना सीखली स त उन्हन के बेटा-बेटी के ऊ मातृ-भासा कइसे हो गइल ? हमरा जाने ई अन्हेर हमरे देस में होला कि जवन भासा मातारी ना जाने ओकरो गिनती मातृ-भासा में हो जाला ।

आरे सहर में एगो महला बा । जहाँ उर्दू बोलल जाला ना त समूचे जिला के लोग भोजपुरी बोलेला आ लिखेला । दुनिया भर के दस्तावेज भोजपुरी भासा आ कैथी अच्छर में लिखाइल बाड़न स । नाँच-बाजा के जतना साटा लिखाला ऊ सभ भोजपुरी में लिखाला । बिआह-सादी के सभ नेवता भोजपुरी में लिखाला तब बतलाईं कि खड़ी बोली वाला हिन्दी जन-जीवन में कवन काम करेला ?

राष्ट्र भासा हिन्दी ह ओकरे एगो रूप भोजपुरी ह राष्टभासा जानना एक दम जरूरीबा आ ऊ सभ के जाने के पड़ी । एह सिधांत से केहू का मत-भेद ना होई बाकी बचपन में ओकर बोझा लइकन पर डालल ठीक नइखे । एह से ई तजबीज कि हिन्दी में बचन के पढ़ाई आ ऊहो मातृभासा कह के करना ठीक ना हो सके । अगर भोजपुरी-हिन्दी के मातृभासा मान के पढ़ाई होई त उर्दू के सवाल सहजे हल हो जाई । गाँव में एको मुसलमान उर्दू ना जानस ऊ सभ भोजपुरी में पढ़िहें ।

एह से सरकार से हमार ई कहनाम बा कि ऊ अपना भासा नीति के ठीक करो आ जब मातृभासा में सिच्छा देवे के तय हो गइल बा त ओकरा में तरफदारी छोड़ देव । जइसन मैथिली ओइसने भोजपुरी आ मगही भोजपुर आ मगह खातिर हिन्दी मातृ भासा हो गइल आ मिथिला खातिर मैथिली ई त बिचित्र न्याय बा । सरकार एह में जल्दी सुधार करी अइसन बिस्वास बा ।

भोजपुरी के लोक साहित अंक पर

—आर्यावर्त—

मासिक पत्र के रूप में भोजपुरी कुछ ही दिन से निकल रही है, किन्तु इसी अल्प समय में इसने अपने लिए विशिष्ट स्थान बना लिया है । इसके संपादक मंडल में हैं :— श्री शिवपूजन सहाय, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, श्री बलदेव उपाध्याय, डाक्टर उदयनारायण तिवारी, डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद, डाक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, श्री त्रिवेणी प्रसाद आदि । प्रस्तुत अंक में भोजपुरी लोक-गीतन के स्वरलिपि, भोजपुरी के लोक गीत, भोजपुरी के विस्तार, बनारसी भोजपुरी के रूप आदि विषयों पर बहुत ही अच्छे ढंग से प्रकाश डाला गया है। लेखो का सम्पादन तथा विषयों का संकलन बहुत सुन्दर हुआ है।

मुद्रक—रघुवंश नारायण सिंह द्वारा पुकार प्रिंटिङ्ग वर्कस् जेल रोड, आरा में छपल ।

www.bhojpurisahityangan.com

प्राचीन धार्मिक पुस्तकों
के अनुकूल
सैकड़ों जड़ी बूटी औषधियों
तथा सुगन्धित वस्तुओं एवं घृत इत्यादि
से बनी हुई
❀ प्रकाश देवधूप ❀
से
नित्य अग्निहोत्र देवपूजा करें
निर्माता
केशरी इन्डस्ट्रीज
प्रो० बसावनराम एन्ड सन्स
चौक, आरा।

भैरव-मलेरिया खातिर
आ
टैरव-पिचरी, पिलही, लीवर
अउर
खून के कमी महला पर
जरूर सेवन करीं।
विहार-आयुर्वेद-भवन,
आरा।

चसमा-घर
जेल रोड, आरा।

भोजपुरी के लोक गीत
श्री कृष्णदेव उपाध्याय एम. ए. पी. एच.डी.
के संग्रह
भोजपुरी ग्राम-गीत दू भांग में
आ
महाराज कुमार बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह
के
भोजपुरी लोक-गीत में करूण रस
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग से मँगा के पढ़ीं

छप गइल
कविवर रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के
कोइलिया के बाद दूसर गीत संग्रह
सितार
भूमिका—डा० उदयनारायण तिवारी
डबल क्राउन ११२+१६ पृष्ठ मूल्य २) डाक ।=)
पता—भोजपुरी कार्यालय, आरा।

मोती लाल एन्ड ब्रदर्स
जेल रोड आरा
MOTILAL & BROS., Book Binder
यहां पर हरेक किसिम का बाइंडिंग,
रूलिंग और नम्बरींग का काम सस्ते दर
पर होता है।
एकवार परीक्षा करें।

www.bhojpurisahityangan.com

Registered No. P. 777 Arrah, Nov., 1953.

'भोजपुरी' के संरक्षक

१ पंडित मुक्तिनाथ मिश्र, बिहार आयुर्वेद भवन, आरा।
२ श्री रंगबहादुर प्रसाद, एम. एल. ए., सभापति, शाहाबाद जिला कांग्रेस-कमिटी, आरा।
३ डाक्टर पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली, नेत्र-चिकित्सक, जेल रोड, आरा, मंत्री भोजपुरी-समिति।
४ श्री ब्रजकिशोर बहादुर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, बिजली सप्लाई कम्पनी, आरा, उप-सभापति, समिति।
५ श्री अब्दुल कयूम अनसारी, एम. एल. ए. भूतपूर्व पुनर्वास-मंत्री, बिहार, पटना, " "
६ श्री महावीर प्रसाद झुनझुनवाला, चौक आरा।
७ श्री कृष्ण बहादुर, एम. एल. सी. भट्टाचार्जी रोड, पटना।
८ श्री उदयराज सिंह, अशोक प्रेस, पटना।
९ श्री मुनेश्वर सिंह, अबिलाख आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी; चटइयाबासा, पीरपैंती, भागलपुर।
१० श्री सत्यदेव प्रकाश, हरिजी के कोठी, आरा।
११ श्री ऋषभदेव पाँडेय, १६० हरिसन रोड, कलकत्ता।
१२ श्री वशिष्टनारायण तिवारी, डि० अ० कंट्रोलर, मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐंड इंडस्ट्रीज, कलकत्ता।
१३ श्री विपिन बिहारी वर्मा, दीवान जी के शिकारपुर, चम्पारण।
१४ डा० रघुनाथ शरण, पटना।
१५ श्री मुरली मनोहर जायसवाल, बक्सर।
१६ श्री महावीर प्रसाद, बारिष्टर, महाप्रवक्ता।
१७ डा० गया प्रसाद, पटना।

भोजपुरी के नियम

१ 'भोजपुरी' हर हिन्दी महीना के पहिला हफ्ता में निकली।
२ 'भोजपुरी' जनता आ साहित्य के सेवा करी, अउर राजनीति के गुटबंदी से फरके रही।
३ एक सै एक रोपेआ देके केहू 'भोजपुरी' के संरक्षक हो सकेला।
४ संरक्षक लोग पत्रिका के जिन्दगी भर के ग्राहक मानल जइहें।

विज्ञापन के दर

	पूरा	आधा	चउथाई	अठवाँ हिस्सा
टाइटिल पेज— चउथा-	६०)	३५)	२०)	१२)
दूसरा-	५०)	३०)	१८)	१०)
तीसरा-	४०)	२५)	१५)	८)
मामूली पेज	३०)	१८)	१०)	६)

मैटर के बीच में—२५ ०/० जादे।
गवरमेन्ट के विज्ञापन—५० ०/० जादे।